

हिन्दी गद्य संग्रह-प्रदीपिका

二、三、四、五

15

[illegible]

(三)

[Handwritten musical notation]

[illegible]

(३)

(पृष्ठ—४)

पुस्तकालय—(पुस्तक + आलय तत्पुरुष समास) पुस्तक रखने का स्थान. लाइब्रेरी । भवन—मकान । उत्तेजना—उत्साह, यत्नावा ।

अनुवाद—उल्था । पुनरुद्धार— पुनः + उद्धार विसर्ग संधि) फिर से स्थापित ।

ज्ञाननाय—चिन्ताग्रस्त । रक्षा कां—यत्नाया । वस्तुतत्तेजक— (वस्तुना + उत्तेजक गुणसंधि) वस्तुता में उत्तेजना पैदा करने वाली । उद्योग—प्रयत्न ।

(पृष्ठ—५)

पूना निवास-काल—पूना में रहते समय । प्रस्ताव—विचार प्रयोजन । अशकाश—छुटी । नवीन—नये । अनेक—भिन्न भिन्न ।

कंसे—सदस्य । यूनिवर्सिटी—विश्वविद्यालय । आरंभ—शुरू । नगर—विनाय विजेय । वर्सायननामे—मरते समय संपत्ति की व्यवस्था ।

(पृष्ठ—६)

उत्तराधिकारियों—(उत्तर + अधिकारियों दीर्घ संधि) मृत व्यक्ति के बाद अधिकार पाने वालों । युक्ति-द्वारा—उपाय से । राजा—प्रसन्न । उपरांत—बाद ।

विश्वविद्यालयों प्रयत्न किया—विश्व विद्या-
भाषा पढ़ाये जाने का उद्योग किया । हस्ताक्षर—(
अक्षर—अक्षर दीर्घ संधि) दस्तखत ।

उपस्थित—रखा । योग्यता—युद्धिमान्नी ।
पत्र—नरफ । विरुद्ध—खिलाफ । महाप्रमा-
मान—व्यपस्थित ।

सिद्धान्त । धार्मिक—(धर्म—इक, विजोयण) धर्म सम्बन्धी । सामाजिक—समाज सम्बन्धी । औद्योगिक—(उद्योग+इक) व्यापार सम्बन्धी । दूरदर्शी—किसी विषय के पहले से सोच लेने वाला, अप्रमेयो । संसार—स्थिर चित्त । प्रभाव—असर । अमिट—(अ । मिट लपुरुष समाम) नाश न होने वाला । विद्रोह—वगावत । विप्लव—उथल पुथल । अज्ञानि—ज्ञानि नहीं, उपद्रव । धृष्टा—नरुत । व्याख्यात—लेखकर, बतलाने । सुधार—संशोधन कीरी—नयी । पटिया—पट्टा । कोरा नहा करना चाहिये—सुधारक को किसी नये सुधार का आरम्भ न करना चाहिये । अर्द्धचित्तित—आधा लिया हुआ । अर्द्ध चित्तित पूर्ण करें—अधूरे काम को पूरा करें, जो सुधार पहले से हो रहे हैं, उन्हीं को पूरा करें । अभितयित—इच्छित । अभिलषित स्थान पर पहुँचना—कार्य में सफल होना । प्राचीनकाल—पुराने समय में ।

(पृष्ठ—३)

नूतन—नया । स्नान—प्रवाह । यहाय में बरबस न जायें—पहले के सुधारों में समझानुसृत चिन्तित परिवर्तन कर न, पर उसे रोकना न चाहिये अथवा उसका दूसरा ही रूप न देना चाहिये । जीवत प्रदान—जीवित उतना कार्य करने योग्य बनाना । मार्चजनिक-सभा—ग्राम सभा, पत्रिक मिटिंग । दुर्मित्त—अकाल । अकाल पीडित—दुर्मित्त से मरता हुआ । प्रसमापत्र—आदर्शनीय, सराहनीय । प्रेमार्थिक—नासरे मद्दने निकलने वाली । पत्रिका—पत्र । सामयिक—समयानुसृत । पुस्तकाकार—पुस्तक के रूप में । दिशदित्तरी—देश की भलाई चाहने वाला ।

संस्थापकों—कायम करने वालों स्थापना करने वाले आत्मसमर्पण आत्मन्यास, अपने को किसी कार्य में लगा देना

(३)

(पृष्ठ—४)

पुस्तकालय—(पुस्तक + आलय तत्पुरुष समास) पुस्तक रखने का स्थान, लाइब्रेरी । भवन—भवन । उत्तेजना—उत्साह, बढ़ावा ।

अनुवाद—उत्था । पुनरुद्धार— पुनः + उद्धार विसर्ग संधि) फिर से स्थापित ।

ग्राहनीय—विताप्रस्त । रत्ता की—बचाया । वस्तुतोतेजक— (वस्तुता + उतेजक गुणसंधि) वस्तुता में उतेजना पैदा करने वाली । उद्योग—प्रयत्न ।

(पृष्ठ—५)

पूना-निवास-काल—पूना में रहते समय । प्रस्ताव—विचार, प्रयोजन । अवकाश—दुष्टी । नयोन—नये । अनेक—भिन्न भिन्न ।

फेलो—सदस्य । यूनिवर्सिटी—विश्वविद्यालय । आरंभ—शुरु । सर—सिताब विजेय । वर्तमानमाने—भरते समय संपत्ति की व्यवस्था ।

(पृष्ठ—६)

उत्तराधिकारियों—(उत्तर + अधिकारियों दीर्घ संधि) मृत व्यक्ति के बाद अधिकार पाने वालों । युक्ति-द्वारा—उपाय से । राजी—प्रसन्न । उपरांत—बाद ।

विश्वविद्यालयों प्रयत्न किया—विश्व विद्यालयों में देशी भाषा पढ़ाये जाने का उद्योग किया । हस्तक्षेत्र—(हस्त—हाथ + क्षेत्र—क्षेत्र दीर्घ संधि) दस्तखत । अधिकार—हक । उपस्थित—गया । योग्यता—युद्धिमाना । समर्थन—प्रतिपादन । पत्र—पर । विरुद्ध—खिलाफ । महानुभाव—सज्जन । विराजमान—उपस्थित ।

(पृष्ठ—७)

लक्षण—चिन्ह । ग्रन्थ—पुस्तक । ग्रन्थकारों—पुस्तक लिख
वालों । विषय—परिचय । रसस्वाद—(रस+स्वाद तत्पु
समास) रसपान । मतपरिवर्तन—विचार बदलने ।

(पृष्ठ—८)

लाभकारी—फायदेमंद । उपकारार्थ—भलाई के लिये । विद्य
भुराग—विद्या में प्रेम । संचार—प्रवाह । उत्तजक—उत्साह दे
वाले । प्रवर्तक—आरो करने वाले । संपत्ति—धन ।

सारांश

रानडे अपनी देश सेवा के लिये प्रसिद्ध पुरुष हो गये हैं
उनका जीवन देश सेवा ही में बीता था । पुना में ऐसी कोई
संस्था नहीं थी, जिसमें इन्होंने भाग न लिया हो । इन्दु प्रका
नामक मासिक पत्र के ये सम्पादक हुए । इन्होंने इस पत्र का
योग्यता के साथ सम्पादन किया कि यह पत्र राजा तथा प्रजा दोनों
का प्रिय हो गया । ये सन् १८७१ ई० में पुना के सचिव हुए और
सन् १८९३ तक वहीं रहे । देशहित कार्यकर्ताओं की सदा उनकी
यहाँ भोज लगी रहती थी । इनका मत देश में धार्मिक, सामाजिक
औद्योगिक तथा राजनीतिक उन्नति एक साथ होनी चाहिये । ये धै
और शान्ति से काम करने वाले थे । ये बड़ों के प्रदर्शित पथ का ही
अनुसरण करना ध्येयकर समझते थे । सार्वजनिक सभा का
ही कर्ताधर्ता थे । इन्होंने सन् १८७३ के अकाल पीड़ितों की बड़ी
सहायता की । पुना के फायमन कालिज के संस्थापक में से एक
आप भी थे । पुना पुस्तकालय और प्रार्थना समाज के भवन उन्हीं
की सहायता से बन गये । धम्म व्याख्यान माला के संस्थापक
आपही थे । पुना का मराठी भाषा पुस्तकालय का अनुवाद करने
वाले सभा का इन्होंने ही पुनरुद्धार किया ।

वस्तुनिष्ठता तथा, एतन् व्याख्यान मात्रा इत्यादि के प्रबंध भी करने योग्य दिया था। एक पंचायत की स्थापना आपने ही करायी थी जो मुझमें बाजों में सुनह करारा करनी थी। हीरा में टाउन हाल आप ही के प्रयत्न में बना था। एक अजायब घर आपने ही स्थापित कराया था। बम्बई हाईकोर्ट के जजरी में आपने सन् १९०० ई. में मिष्ट मिष्ट संस्थाओं को दान दिया था। बम्बई विश्वविद्यालय में आप ही के उद्योग में मराठी, गुजराती भाषा को एम० ए० में स्थान मिला।

प्रश्न और उत्तर

प्रश्न—नाम लिखे गये का सरल हिन्दी में अनुवाद करो।

सुधार करने वालों की केवल केरो पट्टिया पर लिखना आरम्भ नहीं करना है। बुझा उनका कार्य यही है कि वे अक्षर लिखित वाक्य को पूर्ण करें। जो लोग कुछ किया चाहते हैं। वे करने अनिलिपि स्थान पर तभी पहुँच सकते हैं जब उसे सत्य मान लें जो प्राचीन काल में सत्य कहा गया है, और वहास में कभी यहाँ और कभी वहाँ धीमा सा घुमाव दे दें, न कि उसमें बांध बांधें अथवा उसको किसी नूतन खान की ओर बदल ले जायें।

उत्तर—सुधार करने वालों की उक्ति है कि वे बड़ों के प्रदर्शित मार्ग पर चले, उन्हें नवीन मार्ग का अवलम्बन करके सुधार कार्य में प्रवृत्त न होना चाहिये। किन्तु उनके उक्त कथन काय अर्थ रहे गये हैं, उन्हींको दृढ़ करना चाहिये। वे करने कार्य में तभी सफल हो सकते हैं, जो सत्य वाक्य को मान लें कि प्राचीन काल में जो माना गया है, वह सत्य है ही नमयातुल्य उन सुधा

के प्रवाद में वे निश्चित परिवर्तन कर सकते हैं, किन्तु एकदम उमेरोक कर नये मार्ग के द्वारा सुधार का नहीं हो सकता ।

२ प्रश्न—रानडे का देशोन्नति के विषय में क्या विचार था ?

उत्तर—ये धार्मिक, सामाजिक राजनीतिक तथा उद्योगिक उन्नति साथ साथ चाहते थे ।

३ प्रश्न—नीचे जिन शब्दों से सजा बनाया ।

धनता, सामाजिक, औद्योगिक राजनीतिक, स्थापित ।

उत्तर—धनाढ्य, समाज, उद्योग, राजनीति स्थापना ।

४ प्रश्न—रानडे के विषय में क्या जानते हो ?

उत्तर—इनका पूरा नाम महादेव गोविन्द रानडे है । महादेव गोविन्द रानडे का जन्म मासिक जिले के निकाड़ गाँव में सन् १८३२ के १८ जनवरी को हुआ । इनके पिता का नाम गोविन्दराय भाऊ और माता का नाम गोपिका था । बाल्यावस्था में ये बड़े सुस्त और लज्जित स्वभाव के थे । इनका शरीर भी बहुत दुर्बल था । इनकी माता सदा धिक्कत रहती थी कि यह बालक क्या कर सकेगा ।

इनकी प्रारम्भिक शिक्षा मराठी की हुई । बाद में ये काल्हापुर में एक अष्टमा स्कूल में भर्ती हुए । पर इस स्कूल में अष्टमी के बाद ही वे धन मन १८४७ में बड़े ई गवर्नमेंट हाई स्कूल में भर्ती हुए । वहाँ १८५० में जो १८५० में १८५० में धार्मिक वाक्पति भर्ती होने लगा । सन् १८५० में १८५० में धार्मिक वाक्पति भर्ती होने लगा । सन् १८५० में १८५० में धार्मिक वाक्पति भर्ती होने लगा ।

पढ़ते भी थे और पढ़ाते भी थे। इन्हें १०) मासिक वेतन मिलने लगा। इसके तीन वर्ष बाद ये सीनियर फेलो चुने गये और इन्हें १२०) मासिक वेतन मिलने लगा। सन् १८६२ में बी० ए० और बी० ए० आनर्स की परीक्षा इन्होंने पास की और इन्हें एक म्यूर्डपदक और २००) की पुस्तकें पारितोषिक में मिलीं।

सन् १८६४ में उस समय के नियमानुसार रानडे को एम० ए० की डिग्री बिना परीक्षा दिये ही मिल गयी। सन् १८६६ में इन्होंने एल० एल० बी० की परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास की। इसी वर्ष आनर्स इनला की परीक्षा आपने पास की।

वफालत की परीक्षा पास करते ही रानडे को २००) १० मासिक पर शिक्षा विभाग में मराठी अनुवाद करने का स्थान मिला। ये २२ मई सन् १८६६ से १० नवम्बर सन् १८६७ तक इन पद पर रहे। इस बीच में ये सरकार की ओर से अखिल होट की रियासत में भेजे गये, वहाँ इनका कार्य दवा ही उत्तम हुआ। अतः ४००) मासिक वेतन पर कोल्हापुर में ये न्यायाधीश चुने गये पर इन्होंने इन पद से इस्तीफा दे दिया और एलकिन्टन कॉलेज में वे प्रोफेसर हो गये। सन् १८७१ में इन्होंने एडवोकेट की परीक्षा पास की। एडवोकेट की परीक्षा पास करते ही ये बम्बई के मासिक न्यायमूर्ति बने गये। बाद में माला काउन्सिल के मासिक न्यायमूर्ति बने। बाद में पुनः मासिक न्यायमूर्ति बने गये।

सन् १८७३ में इन्होंने सन् १८७३ में मासिक न्यायमूर्ति के पद पर सेवानिवृत्त हो गये। वहाँ से अखिल दवा के मदरास में आकर पुनः अतः २३ फरवरी १८७४ में वे पुनः

के खफीका जज हुए। इसके बाद ये डाक्टर जगह पर स्पेशल जज नियुक्त किये गये। सन् १८६२ में ये वम्यर हाईकोर्ट के जज नियुक्त किये गये। सन् १८६३ में ही ये लेजिस्लेटिव कौंसिल के मेम्बर हुए। इनकी सेवा के विषय में देखें सरांशा। इनका स्वभाव सात्विक था। धैर्य, निस्पृहता, तमा आदि गुणों के भण्डार थे। विद्यामिच्छा, नम्रता पितृमति ईश्वर में विश्वास गंभीरता, कार्यकुशलता की खामी गिना मिलती है।

सन् १९०१ के ८ वीं जनवरी को आपका स्वर्गवास हुआ।

२-दुराश

(पृष्ठ—६)

शम्भार्य—जाफरानी—केसर। बूटी छानकर—भंग पी कर। ख्यपाली.....ढोली कर दी थी—अनहोनी बातें सोचना। अकई—कदम। स्वाधीनता—स्वतन्त्रा। तूल घरज—लम्बाई चौड़ाई। सीमा—हृद। उल्लंघन—पार। दूसरी दुनिया—अन्यत्र। सुरीली—सुर संहित। कनरसिया—गान सुनने के प्रेमी। अमृत ढालना—मधुर शब्द बरसाना।

उक्त—कहा हुआ। अकल चकर में पड़ी—समझ में नहीं आयी। मजार—राग विशेष जो कपो अन्तु में गाया जाता है। पिकास—आविर्भाव। विधि—प्रथा। निर्मल—निर्मल) शुद्ध माफ।

(पृष्ठ—१०१)

मृतु विषयम मृतु में उलट कर।

मित्रवर्ग—मित्र भण्डाली । प्रतिनिधि—किसी व्यक्ति का स्थानापन्न मनुष्य ।

समस्या—विषय । कृष्ण—यहाँ राजा पञ्चमजार्ज मे अभिप्राय है । उद्धव ने तात्पर्य यहाँ बड़े लाट मे है । वज्रवासी से अभिप्राय वज्राजन से है ।

सारांश

प्राचीन समय में भारत में जितने त्यौहार मनाये जाते थे उनमें राजा वज्रा केनें शामिल होते थे । इस पाठ होली के न्योहार का श्रीकृष्ण के साथ मनाने का वर्णन है साथ ही यह भी दर्शाया गया है कि अथ समय के फेर से हमारे राजा हम लोगों के त्यौहार में शामिल नहीं होते । जब श्रीकृष्ण राजा थे, उस समय सभी वज्रा उनके यहाँ जाती थी और वे वज्रा के साथ बड़े प्रेम से होली खेलते थे, पर आज हमारे राजा हमसे बहुत दूर रहते हैं, उनके प्रतिनिधि वायसराय जो भारतवर्ष में रहते हैं, उनके यहाँ साधारण वज्रा का पहुँचना ही असम्भव है, त्यौहारों में शरीक होने को कौन कहे । अथ राजा वज्रा के मिल कर होली खेलने का समय ही नहीं रहा ।

प्रश्नोत्तर

१ प्रश्न—कृष्ण हैं, उद्धव हैं, पर वज्रवासी उनके निकट भी नहीं फटकने पाते । इस वाक्य में कृष्ण, उद्धव वज्रवासी से क्या तात्पर्य है ।

उत्तर—कृष्ण से अभिप्राय राजा का है, उद्धव से वायसराय का और वज्रवासी से भारतवासी का है ।

२ प्रश्न—कनरत्निया, अमृत ढालना चक्र में पड़ना, फटकने पाते इन शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करो ।

(पृष्ठ—१३)

चिता पर एक पाँव रखे बैठे हैं—मरने का तैयार हैं। कर्म में पाँव लटकाना—मरना। कष्टित—(कष्ट + इत) दुःख। कुंठित—लज्जित। अस्मर्यता—शक्ति होनता। तौक्ष्ण—तेज। अनिष्ट कारक—(अन + इष्ट + कारक) हानि करने वाले। पानी मरी खाल—जोन्दा आदमी। अमंगल—दुराई। अजक—अनमर्थ। अन्तःकरण—हृदय। धर्म पंथी—धर्म के मार्गी। पौरुष—सामर्थ्य। मननशील—विचारवान। खयासो—कमीना। नथ—नया।

(पृष्ठ—१४-१५)

मौखिक—(मुख से मौखिक विज्ञेय्य घनता है) जवानी। लकोर के फकोर—प्राचीन भली या बुरी प्रथा पर चलना। अमरौती—अमृत। कौवे के विषय में कहा जाता है, अमृत पिये हैं इस लिये बहुत दिन जीते हैं। मदुधोगी—(मत् + उधोगी) उत्तम प्रयत्नों। बुद्धि—कमी। घोड़ी सी घातों—अल्प समय। वृद्धजीवन—बड़ी जिन्दगी। शुधूषा—सेवा। अनन्यता—असमंगुस्ता, अनस्थाविरता। बंधुषान्स्त्व—कुटुम्ब प्रेम। विद्या वृद्ध—विद्या में बड़। ज्ञानवृद्ध—ज्ञान में बड़े। तपोवृद्ध—(तपः + वृद्ध विस्तर संधि) तप में बड़े। आपन पेट हार में न देहों काह। जब अपना ही पेट का लाला पड़ा है तो दूसरे को क्या है। पत्ते नग—नृत्य के शब्द या पदपद—(पावत् + अवसर) नाने आंग। घृणामय—नरुत रोग्य निरी—विह्वल। खारिड—हंटा। कलीनी—झेली।

हंकार का भाषार्थ—मोग की इच्छा दूर हो गयी अब मान ना न उठा गया। जो आत्मोप जन से वे भी मर चुके। धीरे धीरे कुछ बहा उठने पर आता है मानने अंधेरा हो जाता है। हे वृद्ध ! फिर भी अपने का हान नुन रूप काशवर्धित होता है।

प्राप्ति उनको उसी रास्ते पर चलने दो। ये तो थोड़े दिन में चल ही
वसेंगे। वृद्धों को चाहिये की जो कुछ चन्द्र राज की उनकी जीन्दगी
है, उसमें भगवद्भजन कर के अपना परलोक बनाये। वृद्ध जनों
की सदा हमें सेवा करनी चाहिये। ये भले हों या बुरे हैं तो हमारे
ही।

प्रश्नोत्तर

१ प्रश्न—वृद्ध जनों से नवजवानों को क्या शिक्षा मिलती है ?

उत्तर—वृद्धों से हमें उन बातों की शिक्षा मिलती है, जो पुस्तकों
के पढ़ने से नहीं मिलती। सांसारिक बातों का उनको
अच्छा अनुभव रहता है, जो कुछ कि वे दुनियाँ में रह कर
अनुभव प्राप्त किये हैं, उन बातों की भली भाँति मुझे
शिक्षा मिल जाती है, हमारे धर्म का हमारा जीवन
सुख कर हो जाता है, संसार के ऊँच नीच बातों का
ज्ञान हमें प्राप्त हो जाता है। वृद्धों के उपदेशों पर चलने
से हमारा संसार मार्ग सुख कर हो जाता है। हमारे
जीवन मार्ग के अनेक कोटि दूर हो जाते हैं।

२ प्रश्न—नाँचे लिखे गद्य का अपनी भाषा में अनुवाद करो।

चार दिन के पाहुन कलुआ, मछली अथवा कीड़े की
परसा हुई घाली, कुछ चमराती खाके खाये हैं नहीं,
कीच के घच्चे हैं नहीं, बहुत जियेंगे दस वर्ष। इनने
दिन में मर पच के, दुनिया भर का पीकदान घन
ब जगो के सलवे घाटके अपने स्वार्थ के लिये पराये
दिन में बाधा करने भी तो कितनी मो भी जय
इन भाषों का एक बड़ा समूह हमारे दरें पर जा
रहा है तब ध्यामिर थोड़े ही दिन में आज मरे कल हमारा

दिन होना है। फिर उनके पोछे हम अपने मनुष्यों में घुटि क्यों करें। जब बोड़ी सी घातों की जोन्दगी के लिये अपना वेढंगापन नहीं छोड़ते तो हम अपनी बहुउज्जोषवागा में स्वधर्म क्यों छोड़ें हमारा यही कर्त्तव्य है कि उनकी शुश्रूषा करते रहें क्योंकि भते हाँ या घुरे पर हैं हमारे।

उत्तर—बूढ़ों की चंदरोजा जिन्दगी है, मरने पर मझुये मझुली कीड़े आदि के ये भोजन हाने। अमृत पीकर तो आये ही नहीं। कोण क वरुने भा नहीं तो यमर हो। व्याद से व्यादे दस घण्डा पोंगे। कितने दिन। लखते बूढ़े अपने घुरी करनी पर दुनिया से थू थू हा कर, अपने स्वाध के लिये दूसरे के डाँट फटकर मुन कर भी दूसरे का भनाई में कितनी बाधा करगे, पाँच या दस वष जब तक ज़ायगे तभी तक न। दूसरे से बाधा हा नषा पहुँचा सकते हैं, जब कि जनता एक दूसरे हा माग हा अवलम्बित किये हैं, आविर आज कल इनका मरना हा ह। फिर दूसरा दिन आवेगा, ये बाधा पहुँचाने बात रही न ज़ायगे। फिर हम तब हम को अपने मन्काय में क्यों न करना चाहिये। जब बोड़ मनय के लिये वे अपना घुरा माग नहीं छोड़ते तो हम अपने शीघ्र जीवन के मन्काय हा क्यों ज़ायगे। हमारा यही धर्म है। क इनका से। करन रह आविर भते हाँ या घुरे हैं ना हमारे ही।

३ प्रश्न—यादवयय वरजीवन मझुया देजापकाक जव
किम किम ज हा से जव २ व्याकरण न इस मेल हा क्या
कहत है।

सामग्री—मेट्ट की शोजें । ग्लास—ग्लास । क पना—क पना—विचार
गति । घार बइना—नीम हाता

१७ -

दैनिक—प्रति दिन । पण—आखबार । घटनाघा का बाक का
मिर पर रख कर—नवान समाचार में भरपुर । आधत—मिली
हुई । वणनीय—बखान करने योग्य । क फा न—कमी । यथेष्ट—
(यथा)—इष्ट गुण सधि परिपूर्ण । प्रविभा—विधि सामागिक—
समयानुकूल । चलन निरन—सर्विध म म जय हर सम्यकार रूप
मखन निकाल लेता है । ना सामन मनुष्य का चारय है, उसकी
सूची का निकाल लेता है ।

घटनाघा के कार्पनिक दुरी काम का यम कार रूप मखन
ऊंचे दर पर बेसगा—यम दुरी काम का मखन अधिक मूल पर
विकता है, यमे हो म खपन यम कार गुण कदाबिया का अच्छा
पारितोषिक ल कर प्रकाशन क लिये दूना । काफूर—दूर ।

छात्र कान गोल कर छात्रों में घटनाघा को देखते और
कानों में जहो कहीं जो बात हा रहा था सुनते । हाट—बाजार ।
उद्देश्य—विचार । शाब्दिक—शब्द सम्बन्धी । प्रश्नेत्तरी—प्रश्न
और उत्तर, मधाल जवाब । फयना दुआ निकरा—रानक वाक्य ।
उड़ा लिया—स्मरण कर लिया ।

(१७)

(पृष्ठ—२२)

जंग लगी विद्या की हुरी को गरीबों की गर्दन पर ही तेज किया करते थे—अपनी अनन्यस्व विद्या से गरीबों ही से पैसे वसूल किया करते थे । अजोर्ण—अनपच । कोटर-लीन—खोखली, घसी हुई । जड़ूंगा—लिखूंगा ।

वास्तविक—असर्जनी । कर्कशता—निदुरता । धातु करने—दुर्दशा बनाने ।

(पृष्ठ—२३)

निद्रा टूट गयी—सचेत हुआ । नजर कितनी है—उसकी निगाह में कितने मूल्य की जंचता है । रवि का प्रकाशन किया—इच्छा जाहिर की । साहित्याभिरुचि—(साहित्य + अभि + रुचि) साहित्य में चाह । वृद्धि—बढ़ती । चरित्र विश्लेषण-शक्ति—चरित्र विश्लेषण शक्ति । पुरस्कार—जिखार । नेकी कर कुर्प में डाल—नेकी करके फल की आजा न करना ।

(पृष्ठ—२४)

सडियन—रही । ध्येष्ट रचना—उत्तम लेख । असाधारण—मामूली नहीं, उत्तम । पंख निकलना—सचेत होना ।

प्राहुर—खरीदार । शरत—कुआर कातिक । लुनायने—वित्त-कर्षक । गौरा—अंग्रेज । जलमुगाधियों—जल में रहने वाली पत्नी । स्निग्ध—सुहावने, चिकने । दांडधनूय—शिव का नृत्य विगेष, जिससे प्रकय काल उपस्थित हो जाता है, अन्याचार ।

गडप—डूब गया । हिंसा शक्ति—जोष वध के काम । चरितार्थ—सफल विज्ञान—शून्य, पकान्त ।

(पृष्ठ—२५)

नन्द नाथन—मुन्दरता की नजा रहा है । आभूषणों—
। ६२ ।

सामग्री—मैट की चीजें । डाट—खाका । कल्पना शक्ति—विचार शक्ति । घार चढ़ना—तीम होना ।

(पृष्ठ—२०)

दैनिक—प्रति दिन । पत्र—अखबार । घटनाओं के योग्य को सिर पर रख कर—नवीन समाचारों से भरपूर । मिश्रित—मिली हुई । वर्णनीय—वखान करने योग्य । अकाल—कमी । यथेष्ट—(यथा + एष्ट शुभ्य संधि) परिपूर्ण । प्रतिभा—बुद्धि । सामयिक—समयानुकूल । चलते फिरते चरित्रों में से मथ कर चमत्कार रूप मखन निकाल लेती हैं—जो सामने मनुष्य का चरित्र है, उसकी गूँथों का निकाल लेती हैं ।

घटनाओं के काल्पनिक डेरी फार्म का चमत्कार रूप मखन ऊँचे दर पर बेचूँगा—जैसे डेरी फार्म का मखन अधिक मूल पर विकता है, वैसे ही मैं अपने चमत्कार पूर्ण कहानियों को अच्छा पारितोषिक ले कर प्रकाशन के लिये दूँगा । काफूर—दूर ।

झोल फान खोल कर—झाँसों में घटनाओं को देखते और फानों से जहाँ कहीं जा बातें दौं रही थीं सुनते । डाट—बाजार । उद्देश्य—विचार । शार्दिक—गन्ध सम्बन्धी । प्रश्नोत्तरी—प्रश्न और उत्तर, सवाल जवाब । फटना दृष्टा निकरा—रोचक वाक्य । उड़ा लिया—स्मरण कर लिया ।

(पृष्ठ २१)

मानव बुद्धि—मनुष्य जाति । निरोक्षण—दृष्ट भाव । लघुध्या—हृद्य का एक गहना । व्यम्नता—पथराहट, दशाकुलता ।

भाजनोपगन्त—(न'जन - उपगन्त) भाजन व वाह । उपादान मशह—सामग्री एकत्रित करना ।

(पृष्ठ—२२)

जंग लगी विद्या की हुरी को गरीबों की मदद पर ही तेज किया करते थे—अपना धन-भ्यस्त विद्या से गरीबों को से पैसे वसूल किया करते थे । अजीर्ण—अनपच । काटर-लीन—खासली, धनी हुई । जड़ू गा—निम्नूँ गा ।

वास्तविक—असली । कर्कशता—निटुरता । धात करने—दुर्दशा घनाने ।

(पृष्ठ—२३)

निद्रा टूट गयी—सचेत हुआ । नजर कितनी है—उसकी निगाह में कितने मूल्य की जंचता है । रवि का प्रकाशन किया—हल्का जादिर की । साहित्याभिरुचि—(साहित्य + अभि + रुचि) साहित्य में चाह । वृद्धि—बढ़ती । चरित्र विश्लेषण शक्ति—चरित्र विवेचन शक्ति । पुरस्कार—लिखाई । नेकी कर कुपे में डाल—नेकी करके फल की आशा न करना ।

(पृष्ठ—२४)

सडियन—रही । धेष्ट रचना—उत्तम लेख । असाधारण—मामूली नहीं, उत्तम । पंख निकलना—सचेत होना ।

ग्राहक—खरीदार । शरत—कुम्हार कातिक । लुभायने—चित्ता-कर्षक । गेरा—धम्रेज । जलमुगांधियों—जल में रहने वाली पत्नी । स्निग्ध—सुहायने, चिकने । ताडघनृत्य—शिशु का नृत्य विशेष, जिससे प्रकट काल उपस्थित हो जाता है, अत्याचार ।

गउप—हूँव गया । हिंसा श्रुति—जीव वध के काम । चरितार्थ—सफल । विजन—शून्य, एकान्त ।

(पृष्ठ—२५)

मादय साधन—सुन्दरता को सजा रहा है । आभूषणों—

मुन मुँह पीला पड़ गया। जिस अंग्रेजी उपन्यास में उसने पढ़ा था कि कहानी लिखने से आदमी भालामाल हो जाता है, उस पुस्तक को उसने फिर पढ़ा। उसमें लिखा था कि ऐसे पत्र सम्पादकों से न मिलें जो पत्र का संचालक हों। वे लेख का पारितोषिक नहीं देते। इस पर उसने दूने उत्साह से कहानी लिखना आरम्भ किया।

एक दिन वह एक तालाब के किनारे बैठ कर निबंध लिख रहा था। उसी तालाब पर एक अंग्रेज जलमुर्गाबी का गिकार कर रहा था। उसने बंदूक में एक जलमुर्गाबी को मारा। उसे निकालने के लिए जल में घुसा तो डूबने लगा। कहानी लेखक ने उसे निकाला। वह जले का कलक्टर था। उसने कहानी लेखक को अपने बंगले पर बुलाया और उन्हें समझा दिया कि कहानी लेखक घनने से संसार का काम नहीं चजता। उसे ५० मासिक घनन की पेशकारी दी और जब वह गवर्नर हुआ तब इसे डिप्टी के जगह पर कर दिया।

प्रश्नोत्तर

१ प्रश्न—इस कहानी का भाव लिखो।

उत्तर—आज कल के नवयुवकों को कहानी लिखने की धुन सवार रहती है। इसकी सनक उनके सिर पर पेशी सवार रहती है, उन्हें अपने घरवार की भी चिन्ता नहीं रहती। पर हमारे देश के पत्र सम्पादकों में अधिकतर पत्र संचालक भी हैं, ये निबंधों के लिये रुपये खर्च करना नहीं चाहते। मुफ्त में उन्हें भला या बुरा जो कुछ निबंध मिल जाते हैं उन्हीं को अपने पत्र में द्राप देते हैं। अतः कहानी लेखक घनना तो आसान है, पर प्राप्ति होना

सुन मुँह पीला पड़ गया। जिस अंग्रेजी उपन्यास में उसने पढ़ा था कि कहानी लिखने से आदमी मालामाल हो जाता है, उस पुस्तक को उसने फिर पढ़ा। उसमें लिखा था कि ऐसे पत्र सम्पादकों से न मिले जो पत्र का संचालक हों। वे लेख का पारितोषिक नहीं देते। इस पर उसने दूने उस्ताद से कहानी लिखना आरम्भ किया।

एक दिन वह एक तालाब के किनारे बैठ कर निबंध लिख रहा था। उसी तालाब पर एक अंग्रेज जलमुर्गाघों का गिझार कर रहा था। उसने बंदूक में एक जलमुर्गाघों को मारा। उसे निकालने के लिए जल में घुसा तो डूबने लगा। कहानी लेखक ने उसे निकाला। वह जिले का कलेक्टर था। उसने कहानी लेखक को अपने बंगले पर बुलाया और उन्हें समझा दिया कि कहानी लेखक बनने से संसार का काम नहीं चञ्चता। उसे १०) मासिक वेतन का पेशकारी दो और अब वह गवर्नर हुआ तब इसे डिप्टी के जगह पर कर दिया।

प्रश्नोत्तर

१ प्रश्न—इस कहानी का भाव लिखो।

उत्तर—आज कल के नवयुवकों को कहानी लिखने की पुनः सवार रहती है। इसकी सनक उनके लिए पर ऐसी सवार रहती है, उन्हें अपने घरबार की भाँ चिन्ता नहीं रहती। पर हमारे देश के पत्र सम्पादकों में अधिकतर पत्र संचालक भी हैं, ये निबंधों के लिये रुपये मूर्ख करना नहीं चाहते। मुझ में उन्हें भला या बुरा जो कुछ निबन्ध मिल जाते हैं उन्हीं को अपने पत्र में छाप देते हैं। अतः कहानी लेखक बनना तो आसान है, पर प्राप्ति होना

गया। मैंने उसे धन्यवाद दिया और अपने मन में कहा कि आज इसी डाक्टर के ऊपर इसकी कर्तुत को नोटबुक में लिखूँगा। और फिर ऐसा निश्चय लिखूँगा कि जब कभी यह सुनेगा सिर पीट के रह जायगा।

३ प्रश्न—प्रयाग विश्व विद्यालय के अंदर प्रेजुपट के लिए डाक्टरों या वकालत के सट्टा समय और धन सापेक्ष व्यवसायों के बिना नौकरी में नायब तहसीलदारी या सब रजिस्ट्रारी के पद ही अधिक आकर्षण रखते हैं, पर उनकी प्राप्ति के लिये पिछा से बढ़ कर सिकारिज की जरूरत है। पिता के मित्र नरेंद्र सिंह से जब मैं मिला तब उन्होंने दुःख प्रकाश करते हुए कहा कि मैं इस वर्ष अपने भतीजे की सिकारिज कर चुका हूँ और परिणाम से अधिक सिकारिज करके मैं अपने हाकिम का दिमाग अधिक भोजन से भेदे की तरह बिगाड़ना नहीं चाहता।

इसको सरल हिन्दी में लिखो—

उत्तर—प्रयाग विश्व विद्यालय के अंदर प्रेजुपट के लिये दो ही मार्ग हैं। एक तो वकालत या डाक्टरों पास करें दूसरे नायब तहसीलदारी या सब रजिस्ट्रारी की नौकरी मिल जाय। डाक्टरों या वकालत पढ़ने में समय और धन दोनों का आवश्यकता है, नायब तहसीलदारी या सब रजिस्ट्रार के लिए काफी सिकारिज की जरूरत पड़ती है। मैं अपने पिता के मित्र नरेंद्र सिंह से मिला उन्होंने कहा कि इस वर्ष मैं अपने भतीजे का नौकरा के लिये सिकारिज कर चुका हूँ। अब मैं अधिक सिकारिज नहीं कर सकूँगा क्योंकि उसे अधिक भोजन से मनुष्य का भेदा

कठिन है। अतः द्रव्योपार्जन के लिए कहानी लेखक बनना सिद्धीय है।

२ प्रश्न—मेरे मकान के पास एक डाक्टर रहते थे। वे पुराने हो गये थे। इस लिये अपनी जग नयी चिया की छुरी गरीबों को गदन पर नेत्र किया करते थे। उन्होंने मुझ से एक दिन पुछा—विश्व यावू देखना है। अ० तुम्हारा स्वास्थ्य बहुत अच्छा है। रोज घूमने से तुम्हारा शरीर मजबूत हो गया है। फिर ये बड़ी निराशा भरी दृष्टि से मुझे देखने लगे। माना अज्ञात रोगों से—इतना सस्ता उनके हाथ से निकल गया। मैं यदि कहानी लिखने की तैयारी न करना होता तो उस बूढ़े डाक्टर का कोटर-लान—आखिरी का दृष्ट कर उसका दिन तक की खबर न जाता। उसका धन्यवाद करके मेने मन में कहा—ठहर जा, आज तो ही ऊपर अपने खाने में एक मोट जईंगा, यदि कमी सुन लेगा तो फिर पाँट डालेगा।

इसको सरल हिन्दी में लिखो।

उत्तर—मेरे मकान के सामने ही एक डाक्टर रहता था। वह बूढ़ा हो गया था। फिर भी वह अपनी डाक्टरी द्वारा गरीबों को थोड़ा मंद दवा देकर जैसे मुसा करता था। एक दिन उसने मुझ से पुछा—क्या विश्व यावू? आज कल तो आपका स्वास्थ्य ठीक रहता है। प्रति दिन घूमने से तुम मजबूत हो गये हो। फिर निराशा हो कर मेरी ओर देखने लगा। मानव कहता था कि मैं पुराना रोगों उसके हाथ से पाइ ही काम न बुटकाया था गया। उस समय मैं कहानी लेखक बनना का मन न था। इस लिये उस बूढ़े डाक्टर के चित्रचित्र से मैं उसका दिन का खाने पाइ

गया। मैंने उसे धन्यवाद दिया और अपने मन में कहा कि आज इसी डाक्टर के ऊपर इसकी कर्तूत को नोटबुक में लिखूंगा। और फिर ऐसा निबन्ध लिखूंगा कि जब कभी यह सुनेगा फिर पीठ के रह जायगा।

३. प्रश्न—प्रयाग विश्व विद्यालय के अंदर ग्रेजुएट के जिए डाक्टरों या वकालत के सट्टाज समय और धन सापेक्ष व्यवसायों के सिवा नौकरी में नायब तहसीलदारी या सब रजिस्ट्रारी के पद ही अधिक आकर्षण रखते हैं, पर उनकी प्राप्ति के लिये पिछा से बढ़ कर सिफारिश की जरूरत है। पिता के मित्र नरेंद्रसिंह से जब मैं मिला तब उन्होंने दुःख प्रकट करते हुए कहा कि मैं इस वर्ष अपने भतीजे की सिफारिश कर चुका हूँ और परिणाम से अधिक सिफारिश करके मैं अपने हाकिम का दिमाग अधिक भाजन से भेदे की तरह धिगाड़ना नहीं चाहता।

इसको सरल हिन्दी में लिखो—

उत्तर—प्रयाग विश्व विद्यालय के अंदर ग्रेजुएट के लिये दो ही मार्ग हैं। एक तो वकालत या डाक्टरों पास करें दूसरे नायब तहसीलदारी या सब रजिस्ट्रारी की नौकरी मिल जाय। डाक्टरों या वकालत पढ़ने में समय और धन दोनों का आवश्यकता है। नायब तहसीलदारी या सब रजिस्ट्रारी जिए काफी सिफारिश की जरूरत पड़ती है। मैं अपने पिता के मित्र नरेंद्रसिंह से मिला उन्होंने कहा कि इस वर्ष मैं अपने भतीजे का नौकरी के लिये सिफारिश कर चुका हूँ। अब मैं अधिक सिफारिश नहीं कर सकता। क्योंकि उसे अधिक भाजन से मनुष्य का भेदा

(२३)

उपकारी) दूसरे को भलाई करने वाला । विस्मरणीय—सदा याद रहने योग्य । इतिधो—अन्त ।

(पृष्ठ—३०)

सर्व—सब जगह । विचरता हूँ—घूमता हूँ । सर्वेश्वर—(सर्व—ईश्वर) सब का मालिक । सर्व व्यापक—सब में रहने वाला । उपस्थित—मौजूद ।

रंक—गरीब । संकोच—लज्जा । मानहानि—अपमान । गर्व—घमंड । घंथा—रोजगार । निर्धन—गरीब । भाड़े—किराया ।

दृष्टान्त—उदाहरण ।

(पृष्ठ—३१)

वक्ता—बोलने वाले, लेखक देने वाला । वस्तुता—व्याख्यान । पंडिताई—विद्वता । ग्लानि—दुःख । जी में जी आना—शान्ति मिलना । हुरामरा—प्रसन्न ।

(पृष्ठ—३२)

वस्तुता झाड़ने—व्याख्यान देने । पुराणकार—पुराण बनाने वाले । कर्मवाद—कर्म की प्रधानता मानने वाला सिद्धान्त । पुनर्जन्मवाद—आवगमन के सिद्धान्त । पाश्चात्य—यूरोपीय । भीतर के फटे पुराने और मैले चियड़े—अज्ञानता । समालोचक—किसी वस्तु का गुण अथगुण को बताने वाला, विवेचक । मन-मुटाव—द्वेष । दाँव—मौका ।

(पृष्ठ—३३)

पौ बारह—रंग जमजाना । अवेग्यता—मूर्खता । भासने—ज्ञानने युक्ति—उपाय । स्मृती—दाँख पड़ती । भाव प्रकाश—विचार प्रकट । झुरती—मिलती । अधूरा—अपूर्ण । माहेमा—बड़ाई, महत्व ।

एकबारगी पट गया और उत्साह का सूर्य फिर निकल आया ।

क) इसको सरल हिन्दी में लिखो ।

उत्तर—उनके गुह पर पानी की दो चार बूँदें झलकने लगीं ।
 जैसे कमल सूर्य के किरण में पिल उठता है और पाला
 पड़ने से मुक्तो जाता है वैसे ही पड़ने उनका मुख
 उत्साह ने खिल उठा था पर यह सोच कि अब क्या
 कई चिन्ता और दुःख में फिर मुक्तो गया । उनकी
 यह दशा देख मेरे हृदय में दया आ गयी । उस समय
 मैं बिना दुनये ही उनकी सहायता के लिये जा
 पहुँचा । मैंने धीरे से उनके कानों में कहा—नहा-
 गय ! चिन्ता की कोई बात नहीं मैं आपकी सहायता
 के लिए तैयार हूँ । आप जो चाहें वह कह डालें, मैं
 कान बना लूँगा । मेरे दाइस बन्धाने पर धक्का जी के
 मन में शान्ति आयी । उनका मन पूर्वत् प्रसन्न हो गया,
 छोड़े मनय के लिए जैसे आकाश में बादल घिर आता
 है और वायु के झोके से दूर हो जाता है, वैसे ही उनके
 मुखमरडान की चिन्ता मेरे दाइस बन्धाने से दूर हो
 गयी उनके मन में उत्साह पैदा हो गया ।

(ख) कपिल के विषय में क्या जानते हो ?

उत्तर—कपिल एक मुनि हो गये हैं, ये कर्दम प्रजापति के औरस
 और देवियों के गम में उत्पन्न हुए थे । वे भगवान् के
 पाँच अवतार माने जाते हैं । इन्होंने सांख्यदर्शन की
 रचना की है । इन्होंने ही नगर के साठहजार पुत्रों की
 रचना 'कथ' था ।



एकबारगी फट गया और उन्साह का सूर्य फिर निकल आया ।

(क) इसके सरल हिन्दी में लिखो ।

उत्तर—उनके गुँह पर पत्थरों की दो चार घूँदें झलकने लगीं । जैसे कमल सूर्य के किरण में गिल उठता है और पाला पड़ने से मुक्ता जाता है वैसे ही पड़ते उनका मुख उन्साह में खिल उठा था पर यह सोच कि अब क्या करूँ चिन्ता और दुःख से फिर मुक्ता गया । उनकी यह दशा देख मेरे हृदय में दया आ गयी । उस समय मैं बिना बुझाये ही उनकी सहायता के लिये जा पहुँचा । मैंने धीरे से उनके कानों में कहा—महा-शय ! चिन्ता की कोई बात नहीं मैं आपकी सहायता के लिए तैयार हूँ । आप जो चाहें वह कह डालें, मैं काम बना लूँगा । मेरे दाढ़स बन्धाने पर घला जी के मन में शान्ति आयी । उनका मन पूर्वन् प्रसन्न हो गया, थोड़े समय के लिए जैसे आकाश में बादल घिर आता है और वायु के झोके से दूर हो जाता है, वैसे ही उनके मुखमण्डल की चिन्ता मेरे दाढ़स बन्धाने से दूर हो गयी उनके मन में उन्साह पैदा हो गया ।

(ख) कपिल के विषय में क्या जानते हो ?

उत्तर—कपिल एक मुनि हो गये हैं, ये कर्दम प्रजापति के औरस्त और देवप्रती के गम में उन्मत्त हुए थे । ये भगवान् के पाँचव अवतार माने जाते हैं । इन्होंने सांख्यदर्शन की रचना की है । इन्होंने ही सगर के साढ़े हजार पुत्रों की भस्म किया था ।

एकबारगी पट गया और उन्साह का सूर्य फिर निकल आया ।

(क) इसको सरल हिन्दी में लिखो ।

उत्तर—उनके मुँह पर एगोने की दो चार घूँटें भलकने लगीं । जैसे कमल सूर्य के किरण में गिरल उठता है और पाला पड़ने से मुक्ता जाता है वैसे ही पहले उनका मुख उन्साह ने खिज उठा था पर यह सोच कि अब क्या कहूँ चिन्ता और दुःख से फिर मुक्ता गया । उनकी यह दगा देख मेरे हृदय में दया आ गयी । उस समय मैं बिना बुझाये ही उनकी सहायता के लिये जा पहुँचा । मैंने धीरे से उनके कानों में कहा—महा-शय ! चिन्ता की दोई बात नहीं मैं आपकी सहायता के लिए तैयार हूँ । आप जो चाहें वह कह डालें, मैं काम बना लूँगा । मेरे ढाढ़स बन्धाने पर बक्ता जी के मन में शान्ति आयी । उनका मन पूर्वत् प्रसन्न हो गया, थोड़े समय के लिए जैसे आकाश में बादल घिर आता है और वायु के झोंके से दूर हो जाता है, वैसे ही उनके मुखमण्डल की चिन्ता मेरे ढाढ़स बन्धाने से दूर हो गयी उनके मन में उन्साह पैदा हो गया ।

(ख) कपिल के विषय में क्या जानते हो ?

उत्तर—कपिल एक मुनि हो गये हैं, ये कर्दम प्रजापति के औरस्त और देवघाती के गर्भ से उत्पन्न हुए थे । ये भगवान् के पाँचवें अवतार माने जाते हैं । इन्होंने सांख्यदर्शन की रचना की है । इन्होंने ही सगर के साठहजार पुत्रों को भस्म किया था ।

(२६)

६-वातचीत

(पृष्ठ-३४)

शब्दार्थ—वाक् शक्ति—बोलने की शक्ति । अचिरकाल—अस्थिर
अवाक्—मौन, गूँग । निराला—अनोखा, भिन्न । नाज नयन—
हाव भाव । पुलपिट—व्याख्यान देने का मंच । पुण्याहवाचन—
देव कर्मों में स्थिति वाचन के पहले मङ्गल के लिये पुण्याह शब्द का
तीन बार उच्चारण । नंदोपाट नाटकों में अभिनय के आरंभ का
स्तुति । मर्म—रहस्य । पुटोली—घुमती । करनल प्यनि—ताने
बजाने का शब्द ।

(पृष्ठ-३१)

घरेबू—घर का । मलाप (सम् + लाप) बात चोत । रमाने
प्रमथ करने । संजोर्दगी—जोश । येरुदर—व्यर्थ । अत्यंत—(अति
+ अन्त) बहुत ऊँची । उपरांत—(उपर + अन्त) बाद । काररे
—एक व्यक्ति का नाम ।

(पृष्ठ-३६)

नवे सिरे से फिर से आदमी का चेला पाया फिर से जन्म
हूँगा । मात्तान्कार—भेद मुताकत । आभ्यन्तरिक—भीतर, हृदय
का । आगप—मनःस्थ । प्रहण—ले लेना ।

मीमा—हृदय । हो से लेकर—हो मनुष्यों से । इ. काना में पई
बात गुप्त जाता है—नीचे आदमी के बाँह की बात चाल जाता है
जाना है, गुप्त नही रहता निम्न—चुप बनाने जगण—उमका
मन्त्रांक उद्गार नाते

(पृष्ठ-३७)

माटि क ... क ... क ... क ... क ... क ... क ... क ... क ... क ...
—माटि क ... क ... क ... क ... क ... क ... क ... क ... क ... क ...

गौरव—महत्व । संजीवनी—जोशीला । राम रमौषज—मनमाना ।
दस्तान—किस्ता कहानी ।

(पृष्ठ—३८)

घोड़ा छुट जाना—आरंभ हो जाना । अनुमोदन—समर्थन ।
मुख्य प्रकरण—खास विषय । जीभ के आगे नाचा करेंगे—घर्षण
किया करेंगे । हम चुनी दोगे नेस्त—जो कुछ हैं हमी हैं । हम-
सहेलियों—हमजोलियों । गिल्ल निकषा—नींदा । राम रसरा—
राम कहानी । गाँठेंगे—करेंगे । शैतानी—बदमाशी । कथोपकथन
—(कथा + उपकथन) बातचीत ।

(पृष्ठ—४६)

प्रेमालाप —(प्रेम + आलाप) प्रेम की बात । बतकही—बात-
चीत । विषई—मध्यस्थ । काव्यकला-प्रवीण—काव्य विद्या में
निपुण । विद्वन्मण्डली—(विद्वत् + मण्डली) विद्वानों का समाज ।
सुहृद्गोष्ठी—मित्र मण्डली । क्रम—तिलतिला । रसाभास—मधु-
रता का भाव । बरकते—अक्रम, ये तिलतिला । आधुनिक—नये ।
शुष्क—कोरे ।

(पृष्ठ—४०)

शास्त्रार्थ—वाद विवाद । सरल—मधुर । संघर्ष—टकर ।
जीविका—राजी । सारगर्भित—तत्त्वपूर्ण, मतलब से भरा । दृष्टेशी
—पहले ही से सोचना । ह्वा करे—आवे । ह्वातार्थ—सरल ।

(पृष्ठ—४१)

टि नज्जई—आँख । ब्रिटि—कमी । प्रपंचात्मक—मूठ फूर से
नर । दुर्दृष्ट—अनहान । बमनि-वान—बाग । मनेयाग—मन के
एक कान । कवरत—कंबा । स्वच्छन्द—स्वतन्त्र । कावृ—
वश ।

गौरव—महत्त्व । संजोदगी—जोशीला । राम रमौषल—मनमाना ।
दस्तान—फिस्ता कहानी ।

(पृष्ठ—३८)

घोड़ा छुट जाना—आरंभ हो जाना । अनुमोदन—समर्पण ।
मुख्य प्रकरण—खास विषय । जीम कं आगे नाचा करेंगे—घर्षण
किया करेंगे । हम चुनो दीगरे नेस्त—जो कुद हैं हमी हैं । हम-
सहेलियो—हमजोलियो । गिहू शिकवा—नींदा । राम रसरा—
राम कहानी । गांठेंगे—करेंगे । जैतानी—बदनाशी । कयोपकयन
—(कथा + उपकयन) बातचीत ।

(पृष्ठ—४१)

प्रेमालाप —(प्रेम + आलाप) प्रेम की बात । बतकही—बात-
चीत । विचर्चई—मध्यस्थ । काव्यकला-प्रयोख—काव्य विद्या में
निपुण । विद्वन्मण्डली—(विद्वत् + मण्डली) विद्वानों का समाज ।
सुददगोष्टी—मिश्र मण्डली । क्रम—सिलसिला । रसाभास—नधु-
रता का भाव । बरकत अक्रम, ये सिलसिला । आधुनिक—नये ।
शुक्—करे ।

(पृष्ठ—४०)

शास्त्राय—वाद विवाद । सरल—नधुर । संघर्ष—टक्कर ।
जोषिका राज सागभिन—नवपुल मनलय मे भरा । इरदेशी
—राज मे सावना । कृपा करे—आवे । कृताय—सकल ।

(पृष्ठ—४१)

जोश—आदर । बटि—कमा । मयवा मक—मृद फूल से
ना । इरद—अनहाना । समनि-वान—बाग । मनायोग—मन के
पक के नि कतरना—देखा । स्वस्वन्द—स्वतन्त्र । कावृ—
वर्त

गौरव—महत्त्व । संजीवनी—जोशोला । राम रत्नौषध—मनमाना ।
दस्तान—कित्ता कहानी ।

(५३—३८)

घोड़ा छुट जाना—भारें हो जाना । अनुमोदन—समर्पण ।
मुख्य प्रकार—खास विषय । जोन के आगे नाचा करेंगे—धरुन
किया करेंगे । हम तुनी दोगे नेस्त—जो कुछ है हमी है । हम-
सहेलियों—हमसेलियों । गिल्ल गिकवा—नींदा । राम रत्तरा—
राम कहानी । गाँठें—करों । गैलानो—बदनामी । कथोनकथन
—(कथा + उपकथन) बातचीत ।

(५४—४९)

प्रेमलाप—(प्रेम + आलाप) प्रेम की बात । बतकहो—बात-
चाँत । विद्वद्—मध्यस्थ । काव्यकला-प्रवीण—काव्य विद्या में
निपुण । विद्वानरडली—(विद्वत् + मरडली) विद्वानों का समाज ।
सुदृढगोष्टी—निब मरडली । कम—तिलतिला । रत्तानात—मधु-
रता का भाव । बरकते—अर्थ, वे तिलतिला । आधुनिक—नये ।
शुक्ल—होरे ।

(५५—५०)

शस्त्रार्थ—वाद विवाद । सरल—मधुर । संघर्ष—झगड़ ।
जोषिका—जोशी । सारगमिनि—लचकुरी, मत्तल से मय । दुखें—
—पहन हों में मोचना । कृपा करे—आवे । इतार्थ—महान ।

(५६—५१)

वे गेह—आकर । बरि—कमी । प्रवेवाक—कुछ कुछ में
२१. सुदृढ—मजबूत । बमनि—न त—बग । मनेदोन—मन में
२२. क न कबरन—कैवा । स्वस्वन्त—स्वतन्त्र । अर
२३.

जाय फिर पहरों खतम नहीं होती । वे पुरानी लकीर के पकीर बने रहने की मरिमा खूब गाते हैं । तथा आज कल के नये प्रकार से योग्य नपुंसकान की शिकायत हो किया करते हैं । यही उनकी बातचीत का प्रधान विषय रहता है ।

२. प्रथम—निरा लिखित पद्यों का अर्थ लिखो और अपने वाक्य में प्रयोग करो ।

करतलछनि, हमसुनी दिगरेनेस्व, पोहा लुट जाना ।
अपने मुँह मिया मिट्ठ ।

अर्थ देखो शब्दाथ में । प्रयोग—

बताओ की येसी बातें अदृश्य कहनी पड़ती हैं
जिससे उनका करतलछनि करे ।

एक हाकिम जी अपनी खूब नागरी घर रहे थे ।
एक दिन एक ने कहा—ये हाकिम जी ठीक हैं, हम सुनी
दिगरेनेस्व ।

इसके बहना का पोहा लुट जाना है तो बौन नेक
सबका है ।

अपने मुँह मिया मिट्ठु बनना कोई नाच की बात
नहीं ।

—एक परिहान पूर्ण हृदय

१९००

१९०० १९०० १९०० १९००

१९०० १९०० १९०० १९०० १९०० १९००

१९०० १९०० १९०० १९०० १९०० १९००

जाय फिर पहरों स्वतन्त्र नहीं होती । ये पुरानी लकीर के पत्थरीय होने लहने की महिमा श्रुष गाते हैं । तथा आज मान के सब प्रकार से योग्य नवजवान की शिकायत हो चिया करते हैं । यहा उनकी बातचीत का प्रधान विषय रहता है ।

२ प्रश्न—तिस निमित्त पदों का अर्थ निरेश और अपने वाक्य में प्रयोग करो ।

करतल्लभनि, हमसुनी दिगरेनेहन, पोहा लुट जाना ।
अपने मुँह मिया मिट्ट ।

अर्थ देना प्रभाव में । प्रयोग
बहाली का ऐसी बाले अफसद करने पड़ती है
जिससे उनका करतल्लभनि बने ।

एक हासिज डी अपनी लूह लारीक कर रहे थे ।
एह हुन एह ने कहा—ये हासिज डी हाह है हम सुनी
दिगरेनेहन ।

पारब एह का का पोहा लुट जाना है ना बौन रोह
मबका ।

एह हुन एह ने कहा—ये हासिज डी हाह है हम सुनी
दिगरेनेहन ।

३. निम्नलिखित वाक्यों का अर्थ

१. करतल्लभनि, हमसुनी दिगरेनेहन, पोहा लुट जाना ।
अपने मुँह मिया मिट्ट ।

२. एह हुन एह ने कहा—ये हासिज डी हाह है हम सुनी

यह देखी और तीन कानें—यह डोंग और मुखता ।

(५४-५५)

संगीत—(सम् + गीत) वाद्य सहितगान ।

(पृष्ठ-५३)

घंटर आदि का स्वाद का ज्ञान—मूर्ख गुली का कदर क्या ज्ञाने ।

गन्धार्य—हूर—डेर. धौक. कल—सुन्दर. घनार—राग
विजेष. हरन—हरण. अतन—कानदेव. कहुर—उत्पाद।

पद्याद्यं—यलान् रने फूले हैं. नानां वन में अग्नि का ढेर लगा हो. कोयल मधुर कुहक कुहकेंगी. बैसे हो हे सखि ! सब लाग धमार गायेंगे और प्रदीप उड़ावेंगे । हे विरागिनियों ! सावधान हो जाओ शरीर को संभालो. क्योंकि कामदेव शीघ्र हो कामाग्नि में नष्ट होगा. धैर्य को नष्ट करना हुआ कामाग्नि के बढ़ाने वाला उत्पात नवाना हुआ वस्तुतः आवेगा।

। पृष्ठ ४३ ।

[illegible]

7-2-1

महाराज साहब महाराज साहब - महाराज साहब महाराज साहब
महाराज साहब महाराज साहब - महाराज साहब महाराज साहब

मन्त्रः सर्वान् देवान् भूतान् पितॄन् भवन्तः सर्वान् ।
इन्द्रोऽग्निः सूर्यो ज्योतिर्वायुश्चन्द्रोऽश्विनौ ।

यह सेखी और तीन कानों—यह डोंग और मूर्खता ।

(पृष्ठ—४१)

संगीत—(तन् + गीत) वाद्य सहित गान ।

(पृष्ठ—४१)

बंदर आदि का स्वाद का जाने—मूर्ख गुली का कदर क्या जाने ।

गन्दार्प—हूर—देर, धोका । कल—सुन्दर धनार—राग विशेष । हरन—हरण । कानन—कानदेव । कहर—उत्पान ।

पदार्प—पलान रेतें फूले हैं, मानों वन में अग्नि का ढेर लगा हो । कोयल मधुर हुहक गूहकेगी, बैसे हो हे सखि ! सब लाग धनार गार्दगे और प्रवीर उड़ावेगी । हे विदेगिनियों ! सावधान हो जाओ, शरीर को संभालो, क्योंकि कानदेव शीघ्र ही कानाग्नि से तपावेगा । धैर्य को नष्ट करता हुआ कानाग्नि को बढ़ाने वाला उत्पान मचाता हुआ बलन आवेगा ।

(पृष्ठ ४५)

लाल-पोंके—कोधित । मुधिगिर का बड़ा भारी—करु अर्थात् कान । स्वर्ग—नाक पोंडे का अनुनास—मोड़ । लिखने की तानशी—स्वर्ही । पान के मत्ताले—कटा चुना ।

(पृष्ठ—४८)

महादेव जो के तिर पर हैं—जद्य यह नाख पहादा जाय जो कंठ के मदन करता—घात काटने, गुरपाराख ।

महादेव जो अंग में पोतने हैं—मत्त धरन बंधता है—भूँटा । बलन-धनार—धनार

(३२)

(पृष्ठ—४६)

मुँह आधे—बराबरी करें । उशकी—यद्मासिन । आग्रह—
विनय । आचर—राग विशेष ।

(पृष्ठ—४७)

मसान का पास—श्मशान भूमि में रहना । लाख लाख दातं
सब कड़े कड़े अंग—लाखों जवान नौरानियों । फुरो—सत्य
ईश्वरोपाय—ईश्वर ने कहा है । पशुपतिनाथ—शिष्य श्री
कामाक्षा—देवी । रमते—धूमने फिरने वाले ।

(पृष्ठ—४९)

सेम—जेब नाम । समुन्दर—समुद्र । इंदर—इन्द्र । जब्द-
यत्त, योनि विशेष । रब्द—राक्षस । जोगदा जोगी । पूर्णमास
का चन्द्रमा—सुन्दर स्त्री । पृथ्वी पर उतारा जाय—बुलारा
जाय ।

(पृष्ठ—५२—५३)

भावि वियोग—होने वाली लड़ाई । मृगझोना—हिरन क
पथा । पुंज—ढेर । सुन्दर रूप—काई—जैसे काई से शुद्ध ऊ
ढक जाता है, वैसे ही गहने से सुन्दरता भी द्विज जाती है । कुंर
—पुष्प विशेष । काम—कामदेव । परतंजा—धनुष की डोरी
कमान—धनुष । मजोठ—फल विशेष । आसक्त—अनुरक्त ।

(पृष्ठ—५४—५५)

बल्लभ—स्वामी । अलभ्य लाभ—अशाय बस्तु की प्राप्ति
वेगाने—परापे मरम्पनी की दूसरी दुर्ति—विचलना

मानिक—मालिक गालक अमूर्त । दिनमान—सूर्य । मय
—दिवा ।

पचार्य—तब को सुख देने बाजी संभ्या हो गयी। माण्डव्य की छंगूटी के समान सूर्य को मानो टिबे में दिपा दिया। कमल जला आलस्य में नेत्रों के घंद करने से मुहापनी लग रही है, अर्थात् सुषोम्न देख बामल संकुचित होने लगे। कामदेव की धधारि गाते हुए पतिगण अपने अपने वसेरे को खजे।

अधनिका—परदा।

सारांश

समनांसव को उपलक्ष्य में राजा रानी को धधारि देने गये। रानी ने भी राजा को धधारि दी। इतने में बंधियों ने भी राजा रानी को धधारि दी। यह सुन राजा ने रानी से कहा—

प्यारी ! हम लोग तो आपस में धधारि दे हो रहे थे, अब ये बंधीजन भी हम लोगो को धधारि दे रहे हैं।

राज्ञी ने कहा—महाराज ! बंधी एवम का उम्मा बान्न बिजा है, यह सच हो है। राजा रानी में बातें हो हो रही थी कि विदूषक ने कहा—

धरे भार ! धारि मुने भी धरे, मैं बड़ा भारी परिजन हूँ। अब मैं बहान बना रहा हूँ उस समय लगाने महलों पर हो हो कर पेटिली जेब में हाथो मली। मेरे सगुर अग्य भर देली तोड़े हो मेरे मेरे जिन्दे बाला अकर भैत बरदाह है।

राज्ञी का उत्तर विदूषक—राज्ञी—हमो में तो दुम्हाता नाम लहर पारद पदा है। यह सब विदूषक विद्व कला कोर कामी को लालिनी हम लोग। हम तो कामी न बहा कि कुछ काम का तो लाला

विदूषक न बहा तो महाराज बहा का लाला महाराज न विदूषक का लाला का बहा। हम तो विदूषक लाला लाला लाला लाला

युधिष्ठिर का बड़ा भाई, स्वर्ग, पोंछ की अनुप्रास, लिखने की सामग्री, पान के मसाले ।

उत्तर—(क) विचक्षणा ने कहा—नराज मत हो, जरा अपने कां तो देखो तुम क्या हो । आप तो आप ही हो । पढ़े लिखे कुछ नहीं और चले हो शास्त्र की बातें करने, हम सब तो पढ़ लिख कर मानें मूर्ख ही हैं ।

विदूषक ने कहा—यदि तुम बक बक किये ही जायगो तो तेरा दहिना बाया कान काट लेंगे ।

विचक्षणा बोली—और यदि तुम भी टूट्टे किये हो जाओगे तो तुम्हारा नाक काट कर, मूँड़ मूँड़ दूँगी और तुम्हारे मुँह में कालिख पोत कर कत्था चूना की टीका लगा दूँगी ।

(ख) युधिष्ठिर का बड़ा भाई—कर्ण (कान) । स्वर्ग—नाक । पोंछ की अनुप्रास—मोंछ । लिखने की सामग्री—स्याही, कालिख । पान के मसाले—कत्था चूना ।

२ (क) प्रश्न—नीचे लिखित गद्य को सरल हिन्दी में लिखो, यह भी लिखो यह किसने और कब कहा है—

जंघ न तंघ, ध्यान न ध्यान, न जोग न भोग, केवल गुरु का प्रसाद, पीने का मदिरा और खाने का मांस, नसान का घाम, लाख लाख दामी सब कड़े कड़े श्रंग सेधा में हाजिर रहें पीप मद्य भंग, मिच्छा का भोजन और नमड़े का विज्ञान। लंका पलंका सातो दीप नवो खड गवता ब्रह्मा विष्णु महेश पारमेश्वर जोगी जनी सना वीर मशवरी हनुमान रावण महिगरावन आकाश पाताल जहाँ बाधु नही रह जो कहूँ सो सो करें मेरी

निस्तदाय—(निः+सदाय विलग्न संधि) अस्तमय । मूलपुरुष—
आदि पुरुष । गोदू—इन्हीं से गहलोत राजपूतों की उत्पत्ति मानी
जाती है । कमर बांधी—तैयार हुए । कुलपुरोहित—(तत्पुरुष
समास) खान्दानी पुरोहित । जान होम कर—जान की परधान
कर । सत्यपरायण—सत्यनिष्ठ । दुर्ग—कीला । सम्पूर्ण—विल-
कुल । निरापद—सुरक्षित । शिवोपासक—(शिव+उपासक गुण
संधि) शिव भक्त—शिव का पूजन करने वाला । ज्ञाति प्रिय—
शान्त स्वभाष वाले ।

विचित्र विचित्र—अजीब अजीब । घंशज—घंशवाले । रचनाएँ कविताएँ । गारदीय—(गरन् + ईय) गरद् धृतु के । भूकनोत्सव—भूजा का उत्सव ।

(पृष्ठ—४७)

पाल चापल्य—वचन की चपलता । भोली भाली—सीधी
सादी । आनन्दमयी—आनन्द युक्त । शृंगलावद्ध—एक कतार में ।
फेरी दी—परिष्कार की । मूर्धन्य—आरम्भ ।

सामुद्रिक—हस्त रेखा शस्त्रे धान्ता । हस्तवत्—घदराहट ।
गमनर—भेटिया ज मून

12-1-2

यह सुनते ही विवाह की बात मान्य होने में। माघ
धाम - ह मन्त्र धर्म का शास्त्र रहस्य-विवाह की गुप्त
बात मान्य है इस सम्बन्ध में का शास्त्र में एकमत—
एक मत। यथा शास्त्रान्ति निम्नांक कारणाः। विदित
मान्य

‘आनन्द’ - विपत्तयः - आनन्दः शान्तिः । विपत्तिः क्लेशः ।
मे प्रदत्तं भागं निजतः - शुद्धः । पञ्चदश - दशः शतम् ।

जल । शैव—शिव का । दंतित—सोख देकर । उपाधि—
खिताब ।

(पृष्ठ—६२)

विश्वकर्मा—देवताओं के कारीगर । शूल—भाला । तूनीर
—तरकस । असि—तलवार । चर्म—ढाल । उत्तमोत्तम—
(उत्तम + उत्तम गुण संधि) बढ़िया, बढ़िया । शस्त्रों—हथियारों ।
अलंकृत—सुसज्जित । आदि देव—शिव । भूतनाथ—शिव ।
दिव्यास्त्रों—वे अस्त्र जो मंत्र बल से चलाये जाते थे । पराक्रमी—
सानर्थवान । स्वर्गारोहण—(स्वर्ग + आरोहण—गुण संधि) स्वर्ग
में जाने । अप्सरा-वाहिनी—(तत्पुरुष समास) अप्सराओं से ले
जाते हुए । दीप्तिमय—प्रकाशयुक्त । निष्ठीवन—धूक, सीढ़ी ।
अवज्ञा—अज्ञा न मानना । स्नेहोपहार—(स्नेह + उपहार गुण
संधि) प्रेम भेंट । अवमानना—अवहेलना, अवज्ञा । अनेक—
जो भेदा न जा सके, अकाट्य ।

(पृष्ठ—६३)

घोड़े सौभाग्य का विषय नहीं था—घड़े सौभाग्य की बात थी ।
अंतर्द्वित—गुप्त, तिरोहित ।

मूलमंत्र साधने की प्रतिज्ञा की—यन्त्र प्राप्ति के लिये हृद
मंकल्प हुए । भाग्य चमका—भाग्योदय हुआ । शान्तस्थान—रहने
की जगह । उत्तेजित—उत्तमजित । दैत्य—दुष्ट । पथ—मार्ग ।
परिष्कृत नाम

(पृष्ठ—६४)

अग्निमान्न—अग्नि + अन्न नष्ट नाथ अर्थात् । एतेष्विति
—यथा—उचित । यथा—यथा नाम्न—नमस्कार नाम्न—यथा
—राजपूताने मे यह प्रथा थी कि महागात्रे धारो के जागीर दिया

जल । शिव—शिव का । दंष्ट्रित—सोख देकर । उपाधि—
विताप ।

(पृष्ठ—६२)

विश्वकर्मा—देवताओं के कारीगर । शूल—भाला । मूर्तिर
—तरकम । अग्नि—तनधार । चर्म—ढाल । उत्तमोत्तम—
(उत्तम + उत्तम गुण संधि) बढ़िया, बढ़िया । शस्त्रों—हथियारों ।
अलंकृत—सुसज्जित । आदि देव—शिव । भूतनाथ—शिव ।
दिप्यार्यों—वे अस्त्र आ मंत्र बल से चलाये जाते थे । पराक्रमी—
सामर्थ्यवान । स्वर्गागच्छन्—(स्वर्ग + आगच्छन्—गुण संधि) स्वर्ग
में जाने । अप्सरा-वाहित—(तपुस्त्र समास) अप्सराओं से ले
जाते हुए ॥ दीप्तिमय—प्रकाशयुक्त । निष्पीवन—पूक, मंझो ।
अवला—आला न मानना । स्नेहोपहार—(स्नेह + उपहार गुण
संधि) प्रेम भेंट । अवमानना—अवहेजना, अवज्ञा । अभय—
आ भेदा न आ सके, अकाट्य ।

(पृष्ठ—६३)

रोड़े सौभाग्य का विषय नहीं था—एडे सौभाग्य की बात थी ।
अंतर्हित—गुप्त, निरोहित ।

मूलमंत्र साधने की प्रक्रिया की—यस्य अग्नि के लिये हृद
मकल्लर हुए । भाग्य धनका—भाग्योद्भूत हुआ । वानरवन्द—रहने
को कहा । उल्लेखित—उल्लिखित । हास्य—हुंकार । एव—मार्ग ।
परिपूर्ण—संपूर्ण

२७ ४

अ. २००३ अग्नि + अन्तः पर मंत्र अंतर्हित अंतर्हित
— १ अन्तः अंतर्हित अन्तः पर मंत्र अन्तः पर मंत्र अन्तः पर मंत्र
— २ अन्तर्हित मन्त्र अन्तः पर मन्त्र अन्तः पर मन्त्र अन्तः पर मन्त्र

जल । जीव—जिष का । दीक्षित—सोख देकर । उपाधि—
खिताब ।

(पृष्ठ—६२)

विश्वकर्मा—देवताओं के कारीगर । शूल—भाला । तूनीर
—तरकस । अग्नि—तलपार । चर्म—टाल । उत्तमोत्तम—
(उत्तम + उत्तम गुण संधि) बढ़िया, बढ़िया । शत्रो—दुश्मन ।
अलंकृत—सुसज्जित । आदि देव—जिष । भूतनाथ—जिष ।
दिव्यास्त्रों—वे अस्त्र जो मंत्र बल से चलाये जाते थे । पराक्रमी—
सामर्थवान । स्वर्गारोहण—(स्वर्ग + आरोहण—गुण संधि) स्वर्ग
में जाने । अप्सरा-वाहित—(तत्पुरुष समास) अप्सराओं से ले
जाते हुए । दीक्षित—प्रकाशयुक्त । निष्ठीवन—पूक, सीढ़ी ।
अवज्ञा—आज्ञा न मानना । स्नेहोपहार—(स्नेह + उपहार गुण
संधि) प्रेम भेंट । अवमानना—अपहेलना, अवज्ञा । अभेद—
जो भेद न जा सके, अकाट्य ।

(पृष्ठ—६३)

घोड़े सौभाग्य का विषय नहीं था—घड़े सौभाग्य की बात थी ।
अंतर्हित—गुप्त, निरोद्धित ।

मूलमंत्र साधने की प्रतिष्ठा की—राज्य प्राप्ति के लिये दृढ़
निकल्प हुए । भाग्य खमका—भाग्योद्भूत हुआ । वानस्पत्य—रहने
की जगह । उद्योतित—उद्भूत । दोगदो—दुपारा । एष—मार्ग ।
परिपूत—साक ।

(पृष्ठ—६४)

अग्निगत—(अग्नि + आगत रत्न संधि) अतिरिक्त । द्योतित
—(दया + उचित) दया योग्य । मानंत—निरदार । मानंत-दया
—राजपुत्राने में दया दया थी कि नदारदले धोती के जगह । दया

हैं, पर ईश्वर जिसका रक्त होता है, उसे कोई मार नहीं सकता। जिस कमलावती ने इनके आदि पुरुष गोह की रक्षा की, उसी पंश के ब्राह्मण इसकी रक्षा के लिये तत्पर हुए। वे इसके कुल पुरोहित थे। वे सत्यनिष्ठ ब्राह्मण अपनी जान पर खेल कर इसे मंदार दुर्ग में ले गये। वहाँ एक यदुवंशी भील ने आश्रय दिया। पर वहाँ निरापद न समझ वे इसे लेकर पराशर वन में गये। वहाँ त्रिकूट पर्वत है, उसके नीचे नगौंद (नगौंद) गाँव में लेकर वे रहने लगे।

बाप्पा के बचपन की बातें बड़ी विचित्र हैं। यह उन ब्राह्मणों की गाय चराया करता था। कहते हैं—नागौंद के राजकुमारी शारदीय मूलानोत्सव में मूला मूलने के लिये अपनी सखियों के संग वन में गयी, पर उन लोगों के पास रस्ती नहीं थी। बाप्पा वहाँ गाय चरा रहा था। राजकुमारी ने इससे रस्ती माँगा। बाप्पा ने इस शर्त पर रस्ती दी कि राजकुमारी मेरे साथ सादी कर ले। उस समय खेल में बाप्पा का राजकुमारी के साथ विवाह भी हो गया। यहाँ से बाप्पा के भाग्योदय का सूत्रपात हुआ।

जब राजकुमारी विवाहने योग्य हुई तब राजा ने उसके लिये एक योग्य घर ठीक किया। विवाह की तयारी होने लगी। पर पक्ष के एक सामुद्रिक ब्राह्मण ने राजकुमारी का हाथ देख कर कहा कि इसका विवाह हो गया है। यह सुन राजमहल में बड़ी हलचल मच गयी। विवाह किसने किया, कैसे हुआ, क्यों हुआ आदि बातें जानने के लिये गुप्तचर भूटे। बाप्पा को भी खबर लगी। इसने अपने भील भाषियों को घात न फूटने पाये इसके लिए कसम धरायी। पर यह बात द्विपी नहीं रही। भेद खुल गया।

बाप्पा ने विषदाशंका से पहाड़ के एक निर्जन स्थान में रहने लगा। बल्लोय और वेद नाम के दो भील कुमार ने इसका साथ न

है, पर ईश्वर जिसका रक्तक होता है, उसे कोई मार नहीं सकता। जिस कमलावती ने इनके आदि पुत्रों मोह की रक्षा की, उसी वंश के ब्राह्मण इसकी रक्षा के लिये तत्पर हुए। वे इसके कुल पुरोहित थे। वे सत्यनिष्ठ ब्राह्मण अपनी जान पर खेल कर इसे बँहारे दुर्ग में ले गये। वहाँ एक यदुवंशी भील ने प्राथम्य दिया। पर वहाँ निरापद न समझ वे इसे लेकर पराशर वन में गये। वहाँ विहृष्ट पर्वत है, उसके नीचे नगौर (नगौद) गाँव में लेकर वे रहने लगे।

वाप्या के वचन की बातें बड़ी विचित्र हैं। यह उन ब्राह्मणों की गाय चराना करता था। कहते हैं—नगौद के राजकुमारी शारदीय नृजनोत्सव में नृजा नृजने के लिये अपनी सखियों के संग वन में गयी, पर उन लोगों के पास रस्ती नहीं थी। वाप्या वहाँ गाय चरा रहा था। राजकुमारी ने इससे रस्ती माँगा। वाप्या ने इस शर्त पर रस्ती दी कि राजकुमारी मेरे साथ सादी कर ले। उस समय खेल में वाप्या का राजकुमारी के साथ विवाह भी हो गया। वहाँ से वाप्या के नामोदय का सूत्रात हुआ।

उस राजकुमारी विवाहने योग्य हुई तब राजा ने उसके लिये एक योग्य घर ठीक किया। विवाह की तयारी होने लगी। घर पर के एक सामुद्रिक ब्राह्मण ने राजकुमारी का हाथ देख कर कहा कि इसका विवाह हो गया है। यह सुन राजा महल में बड़ी हलचल मच गयी। विवाह कितने किया, कैसे हुआ, क्यों हुआ आदि बातें जानने के लिये गुप्तचर भेजे। वाप्या की भी खबर लगी। इसने अपने भील भाण्डियों की बात न फूटने पावे इसके लिए कतन धमकी पर यह बात छिपी नहीं रही। भेद खुल गया।

वाप्या ने विषयज्ञका से पहाड़ के एक निजन स्थान में रहने लगा। बलाय और वेद नाम के दो भोजन कुमार ने इसका साथ न

हारीश ने निच लोक जाने का विचार किया। जाने के दिन
बापू की बड़े सवारे हुनवा। बापू को गया देर में बापू को
देखा कि हारीश एक दिग्ग विमान पर स्थित हो जा रहे हैं। बापू
को बापू देख हारीश ने उनका आशीर्वाद देने से जिये रथ रोक
लिया। बापू ने कहा मेरे पास आओ। देखते देखते बापू का
शरीर होम हाथ बढ़ गया पर मुनि के पास तक पहुँच न सका।
मुनि ने कहा मुँह खोलो। बापू ने मुँह खोला। मुनि ने उसके
मुँह में सूँटा। पर बापू ने सूँटा से नहीं लिया।
कहा वह पैर पर लिया। यदि बापू मुँह में लेता तो कनर हो
जाता, पर कनर तो न हुआ फिर भी उसका शरीर गहने में
बसेप हो गया।

[illegible]

उक्त का प्रमाण प्रमाणित है कि उक्त का प्रमाणित
है कि उक्त का प्रमाणित है कि उक्त का प्रमाणित
है कि उक्त का प्रमाणित है कि उक्त का प्रमाणित
है कि उक्त का प्रमाणित है कि उक्त का प्रमाणित
है कि उक्त का प्रमाणित है कि उक्त का प्रमाणित



हारीश ने गिष लोका जाने का विचार किया । जाने के दिन बापा को बड़े सधेरे बुलाया । बापा से गया हेर में छाया तो देखा कि हारीश एक दिव्य विमान पर स्थान को जा रहे हैं । बापा को छाया देख हारीश ने उसको पानीवाँद देने से जिदे रद्द रोका दिया । बापा ने कहा मेरे पास छाओ । देखते देखते बापा का शरीर धीमे धीमे रद्द गया पर मुनि के पास तक पहुँच न सका । मुनि ने कहा मुँह खोलो । बापा ने मुँह खोला । मुनि ने उसके मुँह में घृता । पर बापा ने घृता से नहीं लिया । बल्कि रद्द दर पर गिरा । यदि बापा मुँह में लेता तो कमर हो जाता, पर कमर तो न हुआ फिर भी उसके शरीर मरने से बचेप हो गया ।

एक बापा राज्य लेने के जिदे दूर मर्तिर हुआ । रद्द करने मर्तिरों को लेकर बगल दिया । मर्तिरों में इसे बाधा केरलवाप मिले । उभरीने बापा को दुखारी लज्जदार हो । मंत्र पूँव कर इस लज्जदार के मारने से पर्यन्त भी बट जाना था । इस लज्जदार को घृता इसके रंग वाले दूर लज्जदार करते हैं । रद्द करने बापा विमान के राजा मर्तिर के रद्दी बापा । मर्तिर के लगे बड़े बाहर से करने मर्तिरों में रक्त किया । जिस राज से रद्द मर्तिर के रद्दी मर्तिर, इस दिन से मर्तिर के बाहर मर्तिरों का बाहर रद्द करने लगे । इस मर्तिर से लगे दूर बाहर बापा को हो मर्तिर । और से लगे रक्त रक्त

एक बापा राज्य लेने के जिदे दूर मर्तिर हुआ । रद्द करने मर्तिरों को लेकर बगल दिया । मर्तिरों में इसे बाधा केरलवाप मिले । उभरीने बापा को दुखारी लज्जदार हो । मंत्र पूँव कर इस लज्जदार के मारने से पर्यन्त भी बट जाना था । इस लज्जदार को घृता इसके रंग वाले दूर लज्जदार करते हैं । रद्द करने बापा विमान के राजा मर्तिर के रद्दी बापा । मर्तिर के लगे बड़े बाहर से करने मर्तिरों में रक्त किया । जिस राज से रद्द मर्तिर के रद्दी मर्तिर, इस दिन से मर्तिर के बाहर मर्तिरों का बाहर रद्द करने लगे । इस मर्तिर से लगे दूर बाहर बापा को हो मर्तिर । और से लगे रक्त रक्त

हारीत ने निष लोक जाने का विचार किया। जाने के दिन
 व्या को बड़े सवरे बुलाया। बाप्या सौ गया दूर में आया तो
 कि हारीत एक दिव्य विमान पर स्वर्ग को जा रहे हैं। बाप्या
 आया देख हारीत ने उसको आर्गोर्वाद देने के लिये रथ रोक
 दिया। बाप्या से कहा मेरे पास आओ। देखते देखते बाप्या का
 रथ बीस हाथ बढ़ गया पर मुनि के पास तक पहुँच न सका।
 नि ने कहा मुँह खोलो। बाप्या ने मुँह खोला। मुनि ने उसके
 ह में धूँक। पर बाप्या ने धूँक से नहीं लिया।
 तब वह पैर पर गिरा। यदि बाप्या मुँह में लेता तो अमर हो
 जाता, पर अमर तो न हुआ फिर भी उसका शरीर शत्रुओं से
 निष हो गया।

अब बाप्या राज्य लेने के लिये दृढ़ प्रतिज्ञा हुआ। वह अपने
 सन्निहियों को लेकर चल दिना। मार्ग में इसे दाया गोरखनाथ मिले।
 उन्होंने बाप्या को दुधारी तलवार दी। मंत्र फूँक कर इस तलवार
 मारने से पर्वत मो कट जाता था। इस तलवार को पूजा इसके
 ग वाले हर साल करते हैं। यह अपने मामा चिन्नार के राजा
 मानसिंह के यहाँ आया। मानसिंह ने इसको बड़े आदर से अपने
 सन्निहियों में रख लिया। जिस गंज से यह मानसिंह के यहाँ गया,
 इस दिन से मानसिंह ने अन्य मामलों का कम ध्यान रखने लगे।
 उन लोगों ने इसका मूल कारण बाप्या को ही समझा। और ये
 इसके मनु हो गये।

एक बार किता विदेशी ने मानसिंह पर बदाई की। मानसिंह
 ने अपने मामलों से लड़ने के लिये जाने को कहा। पर उन्होंने
 आगीर के पट्टे तक कर जान में इनकार कर दिया। बाप्या अपनी
 सेना लेकर गया। और वहाँ को मार मगाया। उन्नी दूना में
 यह गजनी गया। वहाँ के अन्ध राजा सज्जन को मार कर

से प्रसन्न हुए और उन्हें बहुत सी नीति-शिक्षा देने लगे । कुछ काल ऐसे ही बीता । मुनिवर धीरे धीरे ऐसे प्रसन्न हुए कि उन्होंने शैव मंत्र में दीक्षित करके अपने हाथ से बाप्पा के गले में जनेऊ पहना दिया और उन्हें "एक जिग के दीवान" की बड़ी भारी उपाधि दी । बाप्पा की अक-पट भलि और स्नेह पूर्वक शिव पूजा देख कर भगवती भवानी भी अत्यन्त प्रसन्न हुईं । उन्हें आशीर्वाद देने के लिये वे स्वयं तिह पर चढ़ कर सामने आईं और उन्होंने अपने हाथ से विश्वकर्मा के बनाये हुए शूल, धनुष, तीर, दूतार, अस्ति, चर्म और बड़ी तलवार इत्यादि उत्तमोत्तम शस्त्रों से बाप्पा को अलंकृत किया । ऐसे आदि देव भगवान् भूतनाथ के मंत्र से दीक्षित और भगवती भवानी के दिये दिव्यास्त्रों से सुसज्जित होकर बाप्पा अत्यन्त पराक्रमी हो गये ।

उत्तर—बाप्पा का निरद्वज भलि देख कर नटाराम हारीत हृदय से उन पर प्रसन्न हुए और उन्हें नीति की शिक्षा देने लगे । कुछ समय इसी तरह से बीत गया । कमला मुनि बाप्पा पर ऐसे प्रसन्न हुए कि उन्हें शिव जी को मंत्रोपदेश दिया । अपने हाथ से बाप्पा के गले में जनेऊ पहनाया । उन्हें एक जिग महादेव की उपाधि दी । बाप्पा की निरद्वज भलि तथा प्रेम पूर्वक शिव जी का पूजन देख कर भगवती भवानी भी उन पर प्रसन्न हुईं । उन्होंने बाप्पा को आशीर्वाद देने के लिये तिह पर चढ़ कर आईं और अपने हाथ से विश्वकर्मा के बनाये हुए शूल, धनुष, तीर, दूतार, अस्ति, चर्म और बड़ी तलवार इत्यादि बहिष्म, बहिष्म, मन्त्र से बाप्पा को सुसज्जित किया ।

से प्रसन्न हुए और उन्हें बहुत सी नौति-मिठा देने लगे । कुछ काल ऐसे ही बीता । तबिन्धर धीरे धीरे ऐसे प्रसन्न हुए कि उन्होंने शैव मंत्र में दीक्षित करके अपने हाथ से बाप्पा के गले में जनेऊ पहना दिया और उन्हें “एक लिंग के दीवान” की बड़ी भारी उपाधि दी । बाप्पा की अक-पट भक्ति और स्नेह पृथक् शिव पूजा देख कर भगवती भवानी भी अत्यन्त प्रसन्न हुईं । उन्हें आशीर्वाद देने के लिये वे स्वयं लिङ्ग पर चढ़ कर सामने आईं और उन्होंने अपने हाथ में विश्वकर्मा के बनाये हुए शूल, धनुष, तीर, तूतार, अस्ति, चर्म और बड़ी तलवार इत्यादि उत्तमोत्तम शस्त्रों से बाप्पा को अलङ्कृत किया । ऐसे आदि देव भगवान् भूतनाथ के मंत्र से दीक्षित और भगवती भवानी के दिये दिव्यास्त्रों से सुसज्जित होकर बाप्पा अत्यन्त पराक्रमी हो गये ।

उत्तर—बाप्पा की निरद्वल भक्ति देख कर महात्मा हारीत हृदय से उन पर प्रसन्न हुए और उन्हें नौति की मिठा देने लगे । कुछ समय इसी तरह में बीत गया । अन्ततः तबि बाप्पा पर ऐसे प्रसन्न हुए कि उन्हें शिव जी की मंत्रोद्देश दिया । अपने हाथ से बाप्पा के गले में जनेऊ पहनाया । उन्हें एक लिंग महादेव की उपाधि दी । बाप्पा की निरद्वल भक्ति तथा प्रेम पृथक् शिव जी का पूजन देख कर भगवती देवी भी उन पर प्रसन्न हुईं । उन्होंने बाप्पा को आशीर्वाद देने के लिये लिङ्ग पर चढ़ कर आईं और अपने हाथ में विश्वकर्मा के बनाये हुए शूल, धनुष, तीर, तूतार, अस्ति, चर्म और बड़ी तलवार इत्यादि अद्वितीय शस्त्रों से बाप्पा को सुसज्जित किया ।

(४९)

(पृष्ठ—६८)

हताश -- (हत + आश—दीर्घ संधि) निराश, नाउमेद । कार्य
संपादन—(तत्पुरुष ममास्त) कार्य को पूरा करने । समता—
शक्ति । अयोग्य—लायक नहीं । उदारता पृथक्—उदारता सहित ।
प्राणी—जीव । संवरण—एकत्रित ।

अस्तीम—वेहद । मस्तिष्क—दिमाग । केंद्र—मध्यस्थान ।
संचलन—संचार । मानसिक—मन की । अश्वल—कमजोर ।

उत्साह वर्द्धक—उत्साह बढ़ाने वाली । विपर्यय—उलट
फेर । परिणाम—फल । विपरीत—उलटा ।

रहस्य—भेद । रुचि—इच्छा । लाभकारी—फायदेमंद ।

(पृष्ठ—६९)

उचित स्थान—उपयुक्त जगह । अनुकूल—सुभाषिक । उला-
हना—किसी बात को गिह्वा । निश्चित—नियत । अतिरिक्त—
अलावा । आकृष्ट—खींच आना ।

एक सी—एक समान । आकार—शक्ल । भेद—फरक ।
सिद्धांत—नियम । तिरोभाव—गुप्त, दूर ।

प्रवृत्त—नियुक्त । कल्पनाएँ—विचारें ।

(पृष्ठ—७०)

उठा करती हैं—पैदा होती हैं । परिलुप्त—लाने, बदलने ।
यथासाध्य—शक्तिभर । दैव—भाग्य । सर्वथा—पूर्ण रूप से । प्रवृत्ति
भ्रूकाव मन की लगन ।

पुष्टि—मजबूती । तशाब्दी—सौ वर्ष की शताब्दी होती है ।
प्रवृत्ति—स्वभाव । विपरीत—विरुद्ध । फलप्रद—लाभदायक ।
साधारणतः—मामूली तरांके से । हानि कारक होता है । विद्वज्जन

प्रायश्चित्त । आधिष्ठाता—अन्वेषण, खोज । निर्मातृ कौशल—कला-
बानुषी । घनि—गन्ध । उक्ता—बाह्य । तत्कालिक—समया-
नुकूल, उक्तो समय । सादृश्य—समानता । अंध विश्वास—नृणां
धैर्यवत् ।

(पृष्ठ—५४—५१)

महत्त्वपूर्ण—महता से भरा । लाभकारियों—ज्ञानदायक ।
विकाश—प्रकाश । उपकार—भलाई । विचारार्थ—विचार-
वान् । प्रस्तुत—प्रकाशित । मार्मिक—आधुनिक । सत्यवत—सत्य
प्रतिष्ठा । दृढ़ संकल्प—पक्का विचार । भगवत्परायण—ईश्वरा-
नुरागो कर्मवीर—कार्य तत्पर ।

आधित—अवलम्बित । अनिवार्य—बे रोक । सहानुभूति—
समवेदना । अनापस्त—बिना परिधन । समुचित—परोचित ।
रानि—दंग । परित—बदल ।

उन्नति प्राप्त—उन्नतिवान् । कल्याणकर—मंगलदायक ।
प्रतिरोध—रुकावट । अन्युद्य—बढ़ती । ताक—हृष्टि । स्वक—
प्रकट करने वाला । सिद्धि—पूर्वता । सहकरिता—एक दूसरे
की सहायता । गोचरार्थ—चिन्तनीय । हृदय विदारक—हृदय को
फाड़ने वाले । वेता—सावधान हो जाओ । दृष्टा—वर्ण्य । मानुषिक
—मनुष्य की । संत—कर्मवीर, दुर्बल । दुर्गुण—दुरे गुण । दुर-
लभ्य—दुरी हास्य

मार्गद्वय

अपने अपने कार्य में मग्न रहने वाले हैं जो मनु-
ष्य । कम प्रकाश में रहने वाले हैं जो मनुष्य । मनुष्य का मनुष्य
बहुत कम है । मनुष्य वह है जो मनुष्य है कि मनुष्य मनुष्य अधिक
परिधन का प्रयत्न करके भी कार्य में मग्न रहने वाले हैं । इनमें वे
निर्गुण हैं जो मनुष्य के मनुष्य हैं । इनमें जो वह मनुष्य मनुष्य उन्नति
दि-ग-तः २ ३

प्रासाधना । आशिष्कार—अनेक, खोज । निर्मातृ कौशल—कला
 जानुरों । धनि—शब्द । उल्लंघन—बाह । तत्कालिक—समय-
 बृहत्, इसी समय । साहस्य—समानता । अथ विशाल—बड़ा
 विशाल ।

(५५—५४—५३)

महत्त्वपूर्ण—महत्ता से महत् । लाभकारियों—लाभदायक ।
विकास—विकास । उपकार—भलाई । विचारजाल—विचार-
जाल । प्रत्युत—एकत्रिंशत् । मांशतिष्ठ—मांशुतिक । सत्यमन—सत्य-
मनसि । दृढ संकल्प—दृढा विचार । नगण्यपण्य—निम्न-
मर्यादा कर्मधारय—कार्य तत्पर ।

आधित—अवलम्बित । अनिवार्य—बै रोक । महादुर्गति—
मनवेदना । अनापन्न—बिना परिधन । तनुवित—पयोवित ।
शक्ति—शून्य । परित्यक्त—पदह ।

उपनि शोत—उपनिषद् । कल्पारकर—मंगलशुभक ।
 प्रतियोग—रकावट । सम्बुद्ध—बुद्धि । ताव—हृदि । स्थल—
 प्रकट करने योग्य । सिद्धि—पूरण । महकरीत—एक दुमरे
 को महादत्त । शोचनीय—विनोद । हृदय विदारक—हृदय को
 काटने वाले वेद—महाभारत हो जाता । सुख—दुःख । मातुरिक
 —मनुष्य का सज्ज—कन्या का दुःख । दुःख—दुःख । दुःख—
 दुःख—दुःख ।

67-12

[illegible]



साराधना । आधिष्कार—अन्वेषण, खोज । निर्माण कौशल—कला
गतुरी । ध्वनि—शब्द । उत्कण्ठा—चाह । तत्कालिक—समया-
कूल, उसी समय । सादृश्य—समानता । अंध विश्वास—मूठा
विश्वास ।

(पृष्ठ—७४—७५)

महत्त्वपूर्ण—महत्ता से भरा । लाभकारियों—लाभदायक ।
वेकाश—प्रकाश । उपकार—भलाई । विचारशील—विचार-
शाली । प्रस्तुत—एकत्रित । सांश्रितिक—आधुनिक । सत्यमत—सत्य
मति । दृढ़ संकल्प—पक्का विचार । भगवत्परायण—ईश्वरा-
पुराणो । कर्मधोर—कार्य तन्पर ।

आधित—अवलम्बित । अनिवार्य—वे रोक । सहानुभूति—
समवेदना । अनायास—बिना परिश्रम । समुचित—यथोचित ।
रोति—ढंग । परिणत—बदल ।

उन्नति-शील—उन्नतिवान् । कल्याणकर—मंगलदायक ।
प्रतिरोध—रुकावट । अभ्युदय—बढ़ती । ताक—दृष्टि । सूचक—
प्रकट करने वाला । सिद्धि—पूर्णता । सहकारिता—एक दूसरे
की सहायता । शोचनीय—चिन्तनीय । हृदय विदारक—हृदय को
फाड़ने वाले । चेता—साधधान हो जाओ । घृया—व्यर्थ । मानुषिक
—मनुष्य की । जाल—कमजोर, दुबल । दुर्गुण—बुरे गुण । दुर-
वस्था—बुरी हालत ।

माराश

अपने अपने कार्यों में सना सफल होना चाहते हैं, पर सफलता किस प्रकार से हाता है यह जानने वाले मनुष्यों की संख्या बहुत कम है । प्रायः यह देखा जाता है कि अनेक मनुष्य अधिक परिश्रम और प्रयत्न करके भी कार्य में सफल नहीं होते, इससे वे निराश हो, भाग्य को कांस्त है । इससे क्या यह मान लेना उचित है—

दि० ग० सं० प्र०—४

कि यह अनिवार्य सहायता से मनुष्य अधिक लाभ उठा सके। इसके लिए मनुष्य का आपन में प्रेम होना चाहिये। यह प्रेमनाथ मनुष्य में तभी पैदा हो सकता है, जब मनुष्य यह समझ ले कि हम लोगों का कार्य दूसरे का सहायता बिना नहीं चल सकता। जब यह बात निश्चय हो आयेगी तब मनुष्य में प्रेम और समवेदना का प्रयत्न ही उत्पन्न होगा। तब स्वभावतः एक मनुष्य दूसरे का सहायता पहुँचाने का प्रयत्न करने लगेगा। तभी महिम्न विज्ञान का उचित ढंग से कार्य में लाया जा सकेगा।

(४) अनिदाम्यं—अवाप्य । मदानुभूति—समवेदना । मस्तिष्क—दिनाय । मनुष्येति—एवावेगम् । परित्यज्य—कार्यं रूपं मेत्याज्यम् ।

उत्तर—जिस निहित शब्द जिस जिस शब्दों से बने हैं और
 इस शब्द में इस शब्द को क्या कहते हैं—

विद्यानंदाय विद्वत्प्रदायै. स्वस्वकारिण, विष्णुनाम्नार
नमः ।

उत्तर-विज्ञान - एक विषय अथवा विज्ञान - एक विषय
विज्ञान विषय

[illegible]

संख्या: १०००/१९९९
दिनांक: १०/११/१९९९

मौद—दुष्ट । शब्द विन्यास—शब्द रचना । आक्षेपेतिर्या—
(आक्षेप + इतिर्या गुण संधि) आक्षेप पृथक् धातें । रसाली—रस
भरी । धडा—भक्ति ।

(पृष्ठ—८४)

ममालोचक—विषेचक । व्यग्रता—व्याकुलता । प्रतीक्षा—
इंतजार । उक्त—कथित । प्रारम्भिक—प्रारंभिक ।

(४)

सीमा—हृद । सर्वोद—(सर्व + उद् गुण संधि) सब से
ऊँचा । दैनिक—प्रति दिन । टिप्पणियाँ—छुट नोट । उत्तीर्ण—
पास । सम्मुख भाग में—सामने वाले हिस्सा में ।

(पृष्ठ—८६)

करीने—सिलसिलेदार । निहायन—बिलकुल । रकाबो—
तस्तरों । मुखर—बोलने वाली । ध्यानापरिचय—ध्यान जगा कर,
ध्यान भरा । अनुग्रह—हृषा, दया ।

निरुद्धा—सम्पत्ति ।

(पृष्ठ—८७)

अपहारा—पुनरावृत्ति । सुसुख—अत्यन्त रसपूर्ण । प्रतिष्ठा—
मान । एवेह—(एषा + एह गुण संधि) पूर्ण ।

मेघमल—मेघा बरने का मल । मयी—मोहित । हृदय पदार्थ
हटा—हटा हटा हटा

अपहारा—अपहारा से ही मे दिष्ट करने वाला जेब । गूढ—गुप्त,
छिपा

॥ ॥

अपहारा—अपहारा से ही मे दिष्ट करने वाला जेब । गूढ—गुप्त,
छिपा । अपहारा—अपहारा से ही मे दिष्ट करने वाला जेब । गूढ—गुप्त,
छिपा । अपहारा—अपहारा से ही मे दिष्ट करने वाला जेब । गूढ—गुप्त,
छिपा ।

भारांग

कानपुर के ब्राह्म महाविद्यालय में बालक शालिकाएँ दोनों साथ साथ पढ़ते हैं। बालक शालिकाएँ का वेम निर्माण है। उनमें स्त्रियों के साथ भी नहीं है। विषय प्रामाण्य का लेख भी उनमें नहीं है। इस विद्यालय में दोन सड़के और दोन लड़कियाँ पढ़ती हैं। सब को एक ही नाम के नाम रखे हैं। वही में एक लड़का रामानन्द है, वह पढ़ा हो दोन छुट्टि वाला लड़का है। बालक रखते उसे कभी कोई नहीं देखता पर परीक्षा कात सुनाने का दिन सड़के पहले सब वहाँ का नाम सुना करते हैं। रामानन्द और मोहिनी जो देवघर गिरमिया की लड़कियाँ देखी हैं। दोनों एक ही कला में पढ़ते हैं। वे साथ साथ नृत्य करने और गाने भी है। अपनी कला में रामानन्द अपने और मोहिनी लड़ा विजय रहा करती है। इस समय उनकी प्रथम दोन वर्ष का है। रामानन्द गोंद राय का लड़का है। वह गढ़वाल का फोट और हिन्दुस्थाना जूता पहनता है, उसके कपड़े सब साफ रखते हैं। रामानन्द के पिता बहुत ईमानदार हैं। धर्मपरायण में जीवित है। अपनी पुत्र की छुट्टि प्रकटता तथा मंदिर गीतका वेम अपने भादि लालेन्द्र का मुख मोर मोर कर सुनी हुआ करते हैं।

अन्य विद्यालय के प्रोफेसर परीक्षा के कात का इन्तजार हो रहा है। काल लक्ष में रहने कात कात अपने अपने का करने लगे हैं, जो उठा है वह वही परीक्षा कर की प्रोफेसर का रहा है। रामानन्द और मोहिनी ने का परीक्षा की है, वह परीक्षा कात उन्होंने के जिने (१) अपने म मे हिमा के मन में भी प्रकट नहीं है। रामानन्द मोर नाम का मोहिनी के अपने पर जाते हैं, और काल लालेन्द्र का मोहिनी कात उनके साथ बिता करते हैं। रामानन्द

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥
श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

रामानन्द ने यह खोज—क्यों लिखा था, कुछ दिनों
बादों के भी नहीं पाई। फिर रामानन्द का यह कहनार जारी
रखा कि वह नहीं जानता। मैंने मेहिला के यह लिखन के लिए
जवाब दिया है। अगर भी रामानन्द को यह ब लिखने को
मालूम हो जायेंगे। मुझे पता है कि यह मालूम जगह का
रामानन्द लिखे।

तु गीतों में यह बात समझ लो = भाई। तुम
भीतर बहर जाने लो। यह भावगुहरी पर प्रकाश हो
जाये।

इस प्रकार के बार बार का प्रयोग करने से ही यह प्रमाण मिलेगा कि यह किताब १७०० ई. में प्रकाशित की गई थी। इस किताब में जो नाम हैं वे सब १७०० ई. में ही जियते थे। इस किताब में जो नाम हैं वे सब १७०० ई. में ही जियते थे। इस किताब में जो नाम हैं वे सब १७०० ई. में ही जियते थे।

गङ्गा नदी की किनारे में किनारे में गङ्गा । गङ्गा नदी में गङ्गा
 गङ्गा नदी गङ्गा नदी गङ्गा नदी किनारे किनारे में । गङ्गा नदी गङ्गा
 गङ्गा नदी गङ्गा नदी गङ्गा नदी गङ्गा नदी गङ्गा नदी गङ्गा नदी गङ्गा नदी
 गङ्गा नदी गङ्गा नदी गङ्गा नदी गङ्गा नदी गङ्गा नदी गङ्गा नदी गङ्गा नदी
 गङ्गा नदी गङ्गा नदी गङ्गा नदी गङ्गा नदी गङ्गा नदी गङ्गा नदी गङ्गा नदी
 गङ्गा नदी गङ्गा नदी गङ्गा नदी गङ्गा नदी गङ्गा नदी गङ्गा नदी गङ्गा नदी

लेख बनकर वैद्यपती में स्मर के नाम से प्रकाशित होने लगे। इससे वैद्यपती के हजारों नये प्राहक हो गये। इनके लेख सब लोग चाब से पढ़ने लगे। जिन विद्वानों का विचार हिन्दी पाठकों को न था वही शास्त्रीय विद्वानों पर विस्तृत लेख पढ़कर हिन्दी द्वितीय स्मर की परिहर्ता, योग्यता, सार गर्भिता तथा लेखन चातुर्य पर मोहित हो गये।

(३) नीचे लिखे शब्द किन शब्दों से बने हैं, इस श्रेणी को व्याकरण में क्या कहते हैं?

मनोमोहक, सारपूर्व, भुवंगभूषण, महारथ।

मनत् + मोहक (संधि)

सार + पूर्व, भुवंग + भूषण, तत्पुरुष समास।

महान् + रथारथ — कर्मधारय समास।

६६—कवित्व

शब्दार्थ—कवि—कविता। मन्दन—स्वर्ग के राजा का नाम। पारिजात—एक स्वर्ग वृक्ष का नाम। अतिविश्रुत—प्रसिद्ध। मलयपालित (मलय—एक पर्वत का नाम + पालित—पालित) मलयपाल पर्वत की हवा, मलय मंद सुगंध प्राप्त। दिग्दर्शन—(दिग्—मरडल—प्रत्यय संधि) दिग्दर्शन। अतिविश्रुत—अतिविश्रुत। समस्त—सबका।

अनन्तर—अनन्तर। समस्त—सारे। मूल—मूल। तीर्थ—तीर्थ।

(पृष्ठ—६४)

एकत्रय—कोयल। मति—मानस।

० ० ० ० ०—१

लेख क्रमशः वैजयन्ती में ब्रमर के नाम से प्रकाशित होने लगे । इससे वैजयन्ती के हजारों नये ग्राहक हो गये । इनके लेख सब लोग चाब से पढ़ने लगे । जिन विषयों का विचार हिन्दी पाठकों को न था उन्हीं शास्त्रीय विषयों पर विस्तृत लेख पढ़कर हिन्दी हितैषी ब्रमर की पण्डिताई, योग्यता, सार गर्भिता तथा लेखन चातुर्य पर मोहित हो गये ।

(३) नीचे लिखे शब्द किन शब्दों से बने हैं, इस भेज का व्याकरण में क्या कहते हैं ?

मनोमोहक, सारपूर्ण, भुजंगभूषण, महाशय ।

मनस् + मोहक (संधि)

सार + पूर्ण, भुजंग + भूषण, तत्पुरुष समास ।

महान् + भाग्य—कर्मधारय समास ।

११—कवित्व

शब्दार्थ—कवित्व—कविता । नन्दनन्दन—स्वर्ग के एक दत्त का नाम । पारिजात—एक स्वर्ग वृक्ष का नाम । अकिंचित्कर—तुच्छ । मलयानिल (मलय—एक पर्वत का नाम + अनिल—हवा) मलयाचल पर्वत की हवा, गीतल नन्द सुगंध पायु । दिङ्-मण्डल—(दिक् + मण्डल—अपभ्रंश संधि) दिगामण्डल । अरुणित—लाल हुआ । समता—धरावरी ।

अनादर—अपमान । समस्त—सारे । मूल—जड़ । सौंदर्य—सुन्दरता ।

(पृष्ठ—६४)

एकमात्र—केवल । गति—सामर्थ्य ।

दि० ग० स० ६०—६

विरह—विद्योग । भयानक—खतरनाक । जयन—सोना ।
 आनीप—(आन्ना + ईप) मंथनी । अपस्या—हालत ।

(पृष्ठ—६७)

धुम्धन कर रही हैं—स्पर्श कर रही हैं । विरहो—विद्योगी ।
 दुग्धदायी—दुग्ध देने वाला । देवेन्द्रा—(देव + इन्द्रा) इन्द्र
 की इच्छा । बानर—दीन । पलियों—श्रियों । विहार—मोड़ा ।
 शनिक—मरा । संगोग—मिलन । शीतल—ठंडा । विरहातुर—
 (विरह + आतुर शीघ्र मंथि) विरह में कातर । शोकसागर—
 (तपुष्य समान ; शोक समुद्र । मौका—देरा, ताका ।

दयार्द्र—(दया + आर्द्र शीघ्र मंथि) दयालु । कातरता—
 आतुरता । अतिर—(अति + पर तपुष्य समान) अतिसी में
 घेष्ट । शोकसागर—(शोक + आतुर शीघ्र मंथि) दुःख में आतुर ।
 शनिक—मरी । देवाद्य—विनाश । विधज गया—दयार्द्र
 हो गया ।

(पृष्ठ—६८)

देग जुग दिया—मिलन करा दिया । तपुष्यत्व—(तपु +
 उरसात्—संज्ञन मंथि) इसके बाद । समागम—संयोग । उलुक्क
 —उल्लोका । नर्मवेदिन—हृदय में चुनौती । समर्पण—भेंट ।
 मोकाजना [मज्ज (मज्ज) + जानना विमर्श मंथि] मन की
 बाट । एतद्वय—एक अर्थ, एकदम । भाग्यनाली—भाग्यरत्न ।
 मनेहमेनी—सुन्दर देग वाला । हनति—रही दुःख । दस-
 स्थित—हालत ।

शोक का सागर—(शोक) दुःखिता की बात ब हो ।
 जो नुके काय में लोहित बोल ब उल्लेख का सागर ।

विमर्श—(विमृ + शिन् + क्त) विमर्श मंथि । विमर्श
 में शोकसागर—(शोक) दुःखिता की बात ब हो ।

विह—विदोष । भयानक—घृतरनाक । गयन—सोना ।
 घातनीय—(घातना + ईय) संघर्षी । अथस्था—हालत ।

(पृष्ठ—६७)

पुष्पन कर रही है—स्पर्श कर रही है । विरहो—विदोषी ।
 दुग्धदायी—दुग्ध देने वाला । दैवेन्द्रा—(दैव + इन्द्रा) ईश्वर
 की इच्छा । कातर—दोन । पलियो—दियो । विहार—प्रीति ।
 दनिक—जरा । संदोष—मिलन । ग्रीवल—टंटा । विरहानुर—
 (विह + आनुर दीर्घ संधि) विह से कातर । मोकसागर—
 (मधुकर समास) मोक समुद्र । भाँसा—देखा, ताका ।

दयाद्र—(दया + आद्र दीर्घ संधि) दयालु । कातरना—
 आनुरता । कृपिण—(कृपि + ण कृपाय समास) कृपियों में
 से । मोकानुर—(मोक + आनुर—दीर्घ संधि) दुग्ध से आनुर ।
 मेविक—मेवी । बैराद्य—तिराज । विजय गज—दयाद्र
 से गया ।

(पृष्ठ—६८)

योग जुग दिया—निज कर दिया । मधुपान्न—(मधु +
 उपान्न—पर्वजन संधि) इनके बाद । समान्न—संदोष । दन्तुक
 —उच्छिष्ट । समरवेदिन—दण्ड से कुली । समरवे—मेद ।
 मोषाभामना [मनस् (मन) + आभाम विर्त्य संधि] मन की
 राह । इन्द्रा—धन, धन, इन्द्र । भाग्यशाली—भाग्यशाली ।
 मधुकरसेनी—मधुकर सेना वाला । दम्पति—दो हुए । उग-
 मित—हासित ।

मोक्ष का मधुप—है निज । दम्पति से मन म हो ।
 के दूरे काम से मीनिक कील से योग से नर राजा ।

दिवसी—दिन + दि + काल मध्य संधि । पाले निजसे
 में । भाग्यशाली—भाग्यशाली । समरवे—समरवे से मीनिक ।

दुःखीला—शील होन । संसर्ग—साध । रमणीय—खियों में
 भेट । अलौकिक—अपूर्व । शक्तिम्पन्न—सामर्थ्यवान् । पुनः-
 पुनः—बार बार । कष्ट—दुःख । मोचन—दूर ।

चित्रविद्या—चित्रकला । आजेख्य—लिपि, चित्रपट । प्रति-
 पालित—परवरण किया हुआ ।

सारंश

संसार में यावन् वस्तु है, उनमें यदि कोई सर्वधेष्ट सुन्दर
 वस्तु है तो कविता ही है । सुन्दर दा क्या है यह सुन्दरता को जड़
 है । मोक्ष संसार में कविता ही सर्वधेष्ट है ।

कविता का आविर्भाव किस सन् में हुआ, देशालोक में हुआ
 या मनुजालोक में, यह बात कहना कठिन है; पर ही कविता का
 जन्मदाता धार्मिक माने जाते हैं । इन्हीं के मुँह से प्रकाशक
 कविता निकल पड़ी ।

कविता में कल्पना का होना आवश्यक है, कविता और
 कल्पना का अनिष्ट सम्बन्ध है । जहाँ कल्पना है वहाँ कविता है ।

प्रश्नोत्तर

१. प्रश्न—कविता को जन्मभूमि कहाँ है ? उत्तर—कविता का जन्म
 लोक, भौतिक लोक नहीं । लोक है स्वर्ग पर कि
 कविता एक बड़ा प्रभावकारी, सर्वज्ञ सिद्ध व्यवस्था
 बना है । स्वर्ग में उसे शक्ति के हाथ में रहे रहे
 दुःख भोग रहे हैं । कल्पना के हाथ में शक्ति संभव
 में बना है । कल्पना का जन्म ही स्वर्ग में हुआ है ।
 धार्मिक चरित्रों में कल्पना के बड़े निष्ठा विचार
 हैं कि कविता उन सब विचारों का एक ही कल्पना
 का है जो वह सब कल्पना का ही है ।

दुःखीला—गोल होन । संसर्ग—साय । रमणीरत्न—स्त्रियों में
 धेष्ट । अलौकिक—अपूर्व । शक्तिरम्पन्न—सामर्थ्यवान् । पुनः-
 पुनः—बार बार । कष्ट—दुःख । मोचन—दूर ।

चित्रविद्या—चित्रकला । आजेख्य—जिपि, चित्रपट । प्रति-
 पालित—परवर्द्धि किया हुआ ।

सारांश

संसार में यावत् वस्तु हैं, उनमें यदि कोई सर्वधेष्ट सुन्दर
 वस्तु है तो कविता ही है । सुन्दर हां क्या है यह सुन्दरता की जड़
 है । सौंदर्य संसार में कवित्व ही सर्वधेष्ट है ।

कविता का आविर्भाव किस सत् में हुआ, देवलोक में हुआ
 या मृत्युलोक में, यह बात कहना कठिन है; पर हां कविता का
 जन्मदाता पालनोक्ति माने जाते हैं । इन्हीं के मुँह से एकाएक
 कविता निकल पड़ी ।

कविता में कल्पना का होना आवश्यक है, कविता और
 कल्पना का घनिष्ठ सम्बन्ध है । जहाँ कल्पना है वहाँ कविता है ।

प्रश्नोत्तर

- प्रश्न—कवित्व की जन्मभूमि कहाँ है ? मृत्युलोक अथवा देव-
 लोक, सो कुछ ठाक नहीं । ठीक है कि जब यह कि
 कविता एक बड़ा प्रभावशाली, सर्वजन प्रिय चक्रवर्ती
 राजा है । स्वप्न में उसे शत्रुओं के हाथ से बड़े बड़े
 दुःख भोगने पड़े हैं । अनेक बार उसका जीवन संकट
 में पड़ा है । भाग का अभाव ही उसका प्रधान शत्रु है ।
 आधुनिक पण्डितों ने अनुसंधान से यही निश्चय किया
 है कि कवित्व उस समय निःसहाय था । शत्रु का दमन
 करने में वह उस समय सफलान्वित नहीं हुआ । उस

यही विश्वास करके वह मिथ्या के साथ विवाह करने को उद्यत हुआ । इस पार कथित्व को विवाह करने के लिये उतनी उत्कण्ठा नहीं सहनी पड़ी ।

(क) इसका भावार्थ लिखो ।

(ख) निम्नलिखित शब्दों का विग्रह सहित समास बताओ—
कुचेष्ट, सचेष्ट, महात्मा, जनसमाज, राजमहिषी, रमणी-
रत्न, विरुतवेशी ।

उत्तर—(क) कल्पना को दूसरे शब्दों में मिथ्या कह सकते हैं ।
यदि किसी बात की कल्पना की जाती है, तो वह बात
मिथ्या समझी जाती है, पर कथित्व में कल्पना की हुई
वस्तु मिथ्या नहीं समझी जाती । कल्पना के जितने
दोष हैं, सब कथित्व में गुण ही समझे जाते हैं ।

कुचेष्ट—कु + चेष्ट—अव्ययी भाष समास ।

सचेष्ट—स + चेष्ट—अव्ययी भाष समास ।

महात्मा—महान् + आत्मा—कर्मधारय समास ।

जनसमाज—जन + समाज—तत्पुरुष समास ।

राजमहिषी—राजा + महिषी—तत्पुरुष समास ।

रमणीरत्न—रमणी + रत्न—तत्पुरुष समास ।

विरुतवेशी—विरुत + वेश + ई - तत्पुरुष समास ।

३ प्रश्न—निम्नलिखित शब्दों की उत्पत्ति तथा प्रत्यय बताओ ।

प्रेमिक, कातरता, प्रयत्न, आत्मीय ।

प्रेमिक—प्रेम + इक प्रत्यय लगाकर प्रेमिक बना है ।

कातरता—कातर + ता प्रत्यय लगाकर बना है ।

प्रयत्न—प्र उपसर्ग यत्न से लगा कर प्रयत्न बना है ।

आत्मा से ईय प्रत्यय लगाकर आत्मीय बना है ।

१२—त्याग और उदारता

(पृष्ठ—१०२)

शब्दार्थ—कष्ट भोगने—दुःख सहने । दृढ़ बने रहे—अपने षण पर डटे रहे ।

सीमा प्रान्त—सरहद के आस पास । विपत्ति—दुःख । दुःख उठाये—दुःख महे । भाग्यहीन—(भाग्य + हीन तत्पुरुष समास) अभाग्य । अह्वा—आश्चर्य सूचक अव्यय ।

जननी .. गरीयसी—माता और जन्मभूमि स्पर्ग से भी बड़ी है ।

अन्नदाता—(अन्न का देने वाला तत्पुरुष समास) प्रभु-पालन करने वाला ।

अधम—नोच । शत्रुओं के हाथ में छोड़ कर—शत्रुओं को सौंप कर । अज्ञानवास—(अ + ज्ञान + वास तत्पुरुष समास) बिना जाने स्थान में रहने के जिये ।

(पृष्ठ—१०३)

पृथ्वीनाथ—(तत्पुरुष समास) पृथ्वी का माजिक । यदनों—मुमत्रमानों । परमेध्वर—(परम + ध्वर गुण संधि) परमा । श्री हृन्व —महाराज । जाटा मकं—जीन मकं । धर्माध्वर (धर्म का अध्वर तत्पुरुष समास गुण संधि) धर्म मूर्ति । कलकित—(कलक + कित) दूषित ।

पद्म / जल में लोटने वाला । कोय—काई । जनावरा—जानवर । मरु पृथ्वी । जल में बहने वाला । उन्मथ ।

पद्माय—पद्म का माना अन्ध है । जहाँ अपना कोई नहीं है और जहाँ उन्मथ—जहाँ नाथ नहीं है वहाँ बड़ा उन्मथ हो ।

मन्दार्थ—दुरदिन—(कर्मधारय समास) घुरे दिन । दुरयज—
कुराव लगह । जैये—जाय । जैयत—जाते हैं ।

पद्यार्थ—रहोम कहते हैं कि घुरे दिन में घुरे स्थान में चजा
जाय, जैसे प्राग के लगने पर लाग घूर पर भाग जाते हैं ।

मन्दार्थ—रच्छी—रक्षा की । भार—धोम । हलुकाय—
हल्का हो ।

पद्यार्थ—जितनी रक्षा इन्द्रायु ने लेकर अब तक के सूर्यवंशी
राजा करते रहे, हा अधम प्रताप, आज तू उन्नी को त्याग रहा है ।
जो प्राणों के समान प्यारी है आज उन्नी को तू तज रहा है । हे
मेषाड़ के सुख का सार ! कृपा कर मुझे समा करना । मैं सदा
भार हो रहा । तुम्हारे कित्त काम आया ! मुझे विदा करो जिससे
तुम्हारा दोस्त आज हल्का हो जाय ।

• (पृष्ठ—१०४)

नजल—(स + जल अव्ययी भाव समास) भीख से भरे ।

आधयदाता—(आधय + दाता तत्पुरुष समास) शरण
देने वाले ।

मंत्रिवर—(तत्पुरुष समास) मंत्रियों में श्रेष्ठ । धोर-धोर—
धीर धीर धीर द्वन्द्व समास । अधार—(अ + धार) धीर रहित ।

मन्दार्थ—धारै—रखे । विमुख—विपरीत । धँचै—रहे । संचै—
संचित करे । किरतघ्न—कृतघ्न जजन—गर्मिदा होता । अदत—
रहते ।

पद्यार्थ—उस सेवक को धिक्कार है जो स्वामी का काम छोड़
जीवन धारण करे । अधांतु स्वामी के काय में प्राण न दे दे । उस
जीवन को धिक्कार है जो जीवन को भजोई न समझे अधांतु
जीवन का लाभ क्या है, यह न जाने । उस शरीर को धिक्कार है

मन्त्रार्थ—द्वैता—राजल । कल्पने—कल्पना । कल्पना—
कल्प । कल्प—भार । कल्प—विनय ।

[illegible]

१४३-१४४ ॥ १४५-१४६ ॥

(८१-१०३)

१. १०००—१०००—१००० २. १०००—१०००—१०००
 ३. १०००—१०००—१००० ४. १०००—१०००—१०००
 ५. १०००—१०००—१००० ६. १०००—१०००—१०००

[illegible]

第 1 章 緒 論

[illegible]

(पृष्ठ—१११)

मुनिजिन—सगरी मरु मर्यादा दुषा । साजाकमय—प्रकाश
 क । धोलीपत्र—पत्र कागज में ।

सर्गिनी—सगरी सागी, गेहूँ ।

सदापं—सुख मर्यादायां—सुख को लहलहाने वाले ।
 सुखी—सुख । देव—देव । सारिणी—निहावर ।

सदापं—सदापं धर्म गांधी, गांधी, हिन्दुपति सविद कुल
 में लोभ सुख को लहलहाने वाले सारा प्रकाश में साज भारत को
 साज सुख को लहलहाने वाले सारा प्रकाश में साज भारत को
 साज सुख को लहलहाने वाले सारा प्रकाश में साज भारत को
 साज सुख को लहलहाने वाले सारा प्रकाश में साज भारत को

सोवर्गिनी—सदापं जो सदापं को सदापं देव है । हिन्दु
 देवी—(लक्ष्मी सदापं) हिन्दुपति में सदापं करने वाले । सोव
 र्गिनी—सदापं । सदापं—निहावर । सदापं सदापं—सुख
 सुख । सदापं—सदापं । सदापं—सदापं । सदापं—सदापं ।
 सदापं—सदापं । सदापं—सदापं । सदापं—सदापं ।

सदापं—सदापं । सदापं—सदापं । सदापं—सदापं । सदापं—सदापं ।
 सदापं—सदापं । सदापं—सदापं । सदापं—सदापं । सदापं—सदापं ।
 सदापं—सदापं । सदापं—सदापं । सदापं—सदापं । सदापं—सदापं ।

(पृष्ठ—११२)

सदापं—सदापं । सदापं—सदापं । सदापं—सदापं । सदापं—सदापं ।
 सदापं—सदापं । सदापं—सदापं । सदापं—सदापं । सदापं—सदापं ।
 सदापं—सदापं । सदापं—सदापं । सदापं—सदापं । सदापं—सदापं ।
 सदापं—सदापं । सदापं—सदापं । सदापं—सदापं । सदापं—सदापं ।

सदापं—सदापं । सदापं—सदापं । सदापं—सदापं । सदापं—सदापं ।
 सदापं—सदापं । सदापं—सदापं । सदापं—सदापं । सदापं—सदापं ।
 सदापं—सदापं । सदापं—सदापं । सदापं—सदापं । सदापं—सदापं ।

मेरी जो कुछ सम्पत्ति है, यह आपकी है, आप वापस लौट चले और सैन्य संप्रदाय कर युद्ध करें ।

पहले तो राणा ने इनकी सम्पत्ति लेने से इनकार किया । पुनः बहुत कुछ कहने पर ये वापस लौटे भीलों ने भी राणा का साथ दिया । ये उदयपुर पर धावा चाल दिये । उसे अपने अधिकार में कर लिया ।

महाराणा की वीरता पर अकबर भी मुग्ध था । खान खाना ने भी अकबर से महाराणा को शांति में रहने देने के लिये बहुत कुछ धिन्ती की । अकबर ने भी अथवा राणा पर चढ़ाई पुनः नहीं की ।

प्रश्नांस्तर

१ प्रश्न—यह दिन मय दिन आनन्द रहे ।

सदा मिथार स्थलत्र विराजति त्रिगौरवर्द्धि गदै ।
 घर घर प्रेम गङ्गा राजे, कृतज्ञ कतेस यहै ।
 बल, पौरुष, उत्साह, सुदृढ़ता आरज वंश यहै ॥
 वीर प्रमथिनी वीर भूमि यह वीरहि प्रमथ करै ।
 इनके वीर काथ में परि अरि काथर कुर जरै ॥
 राजा निज मरजाद न दाग प्रजा न मरि नरै ।
 परम पवित्र मुखः यह नामन मय दिन यही मने ॥
 जय जय अमर मुखः विजय नय नय विजय गौरी ।
 नय नय प्रमथ नय कारनि गार मय जग वीर ॥
 हे कल्याणमय अमर नय विजय नय नय यम ।
 यह आरज मरजाद न दाग प्रजा न मरि नरै ॥

(क) उपरान्त पद्यों में आरज विजय नय अमर विजय ।

- (२) जब तक मरीर में प्राण रहे तब तक धर्म न त्यागना चाहिये।
- (३) मनुष्य जब तक धर्म की रक्षा करता है, तब तक दण्ड पाता है।
- (४) जब तक रक्षति पाता है तभी तब, अन्य सार्वक करता है।
- (५) हे पुत्र ! महा अपने दण्ड की मर्यादा की रक्षा करना। इस सांसारिक दुष्ट सुख के लिए दुष्ट में कलंक न लगाया।

६३-भानुप्रताप की कथा

(57-11)

मन्त्रः—सगुणिक—(राज्य-विधि-प्रकारो मन्त्र सनातन)
मिथुना । विद्वत्—विद्वत् । राक्षस—राक्षस पर । कर्मा—
कर्मा । अष्टांग—अष्टांग-राम राम । अष्टांग कर्मा भूषणः ।

[illegible]

Figure 4.4

57-47

सुराज—सुन्दर राज्य । सहायता—सहायुभूति । अमीष्ट—
(आभि + इष्ट दीर्घ संधि) रन्ध्रित । गुप्त—द्विषा ।

परामर्श—सलाह । सविस्तर (अव्ययी भाष समाम)
विस्तार सहित ।

वर्णनशुद्धि—कथा के वर्णन का विस्तार । वाराह—सूघर ।
गुह्यता—दीर्घता । वर्णने—जगली । सूकर—सूघर । विपुल—
अनेक । कपटी—झुल्ला । श्रम—मेहनत ।

TH-115

दाहित—मज्जन्तू । चार भाष—भयकरता । गंभीरता—मह-
 नता । संकल्प करे—विचार करे ।

जगन्माय्य — (जगत् + माय्य अङ्गुन मंथि) मसार के मान-
नीय । सिद्धान्तो—नियमा ।

दोहाथ तुलसीदास जी कहते हैं कि जमा होनाकार होता है, वैसे ही महायज्ञा मिलता है, भाषा उसके पास नहीं आती किन्तु जहाँ जो घटना होने वाला होता है वहाँ उसे ले जाती है ।

आपदा—विपत्ति वरी राजा—परु ने जय, दूसरे सत्री तीसरे राजा, कपट, कल ने अपना काय साधना चाहता है।
उपर्यंक—(ऊपरी - उक्त यत्न मधि) ऊपर कहा हुआ ।

मिश्राः—सोममगः पुष्कालिक—पद्म समय का ।
गौरव—वृद्धयन । व्यतिन मूर्चिन व्यक्त । म्यभावनः—स्वभाव
से । सार्यभाव—मुनिभाव

प्रतापमानु है, अब हमसे बहुत सेने का अच्छा मौका है। राजा के पुत्रने पर उसने अपना नाम पकवानु यमनाया अर्धान् गुरि के आग्रह से ही मैं यहाँ रहता हूँ। राजा उसके माया जाल में फँस कर उसके पहुँचा हुआ महात्मा मान लिया और उसे अपना राज्य अर्पण करने के लिए यमदान माँगा। उसने कहा—तुम्हारा राज्य तभी अर्पण हो सकता है। जब ब्राह्मणों का गज में कर लो और वह तभी हो सकता है जब मैं मोहों यज्ञों और तुम गिरेसो। राजा ने यह बात मान ली। उसने अपनी पुण मिथ्या उमाने के लिए राजा से कहा कि, तुम्हें मोल दूँ मैं हाँ मैं तुम्हारे राजधानी को पहुँचा दूँगा। तुम्हारे पुराहित के रूप में मैं तुम्हारे यहाँ आऊँगा। ये सब बात समझ कर राजा को मोलने की आज्ञा दे दिया। राजा यहाँ वा वह मोल गया।

इधर कलकत्ते में जा मूचर का रूप धार कर राजा को बहमाल
देकर वन में बंदूक मारने लगा। उन्हा जग गया कपटी के पास
छाया। राजा के भाग के लिए बिचार कर कालकेतु ने सोचें ही में
राजा के महल में पहुँचा दिया। राजा का कपटी मुनि पर पूर्ण
निश्चय हो गया।

राजा ने ब्राह्मणों का त्याग कातकभु ने समझे बनायी।
ब्राह्मण अब भोजन करने बड़े बड़े आकाश वाली हुई। ब्राह्मणों
सब क्रम में लामों, हमने ब्राह्मण का भोजन मिला। आकाश वाली
एक ब्राह्मणों ने राजा के बर्तन का बजाव दान का नाच दे
दिया।

हमारी प्रतिष्ठा १३१४ ई. २००० में सिद्ध हुई। यह सुनिश्चित
है कि हमारा प्रयत्न १३१४ ई. २००० में ही सफल होगा।

प्रश्नोत्तर

! प्रश्न—राजा प्रतापमानु की कथा संक्षेप में लिखो ।

उत्तर—देखो पाठ का सारांश ।

प्रश्न—कपटो ने स्वयं राजा के परामर्श का इसीलिए प्रबंध बांधा था कि उसी का पूरा दोष समझ पड़े । उसने समझा था कि साल भर में कभी न कभी विप्र भांस का हाजि खुल ही जायगा । उसके भाग्यवश ऐसा पहले ही दिन हो गया । राजा ने शूकर का पीछा करने में धैर्य दिखा लाया था, परन्तु आकाश घांसी सुन कर मुक्ति शून्यता से शाप से प्रथम ही घबड़ा कर पद कुद भी न कह सका । वह शूरता के कार्यों में धैर्यवान् था परन्तु बुद्धि में बालकों के समान अध्यान था । शापोद्धार के विषय में भी उसने आह्वानों में कुद घिनती न की और उन्होंने भी प्रगट में तो उसे निर्दोष कह दिया । शिष्ट वास्तविक कुटिलता पर विचार कर शाप तोलता वो कुद भी न घटाया ।

(क) उपरोक्त गद्य का मरज हिन्दी में लिखो ।

(ख) निम्नलिखित शब्द किस प्रकार का संज्ञा है और कैसे बने हैं ।

शून्यता, शूरता, धैर्यवान्, वास्तविक ।

उत्तर (क)—कपटो मुनि ने इस बात को निश्चय करने ही के लिए राजा की स्वयं परामर्श को कहा था कि, उसी का दोष प्रकट हो । उसने यह सोचा कि साल भर में कभी न कभी आह्वानों को यह भास ही हो जायगा कि राजा ने हम लोगों को आह्वान का लोभ मित्रता है । करने

(पृष्ठ—१२४)

धेनवधन—(द्वन्द्व समास) तड़क भड़क । धावणी—धावण
 पूर्णिमा को धार्मिक कृत्व विगेष । रत्नावंधन—राखी बंधन ।
 हृण—नियानुसार । रामवाण (तन्पुण्य समास) श्रीरावन्द
 के तौर । अत्याचारी—(अति + आचार + ई) अन्यायी । वेधन
 बंद कर, काट कर । राष्ट्रीयता—अपना राज्य । जन्माष्टमी
 जन्म + अष्टमी—दीर्घसंधि) भाद्रा कृष्णपक्ष की आठवीं तिथि ।
 मोक्षध—(जन्म + उत्सव) जन्म का उत्सव । परतंत्रता—
 अधीनता । सरिता—नदी । देश-ममता—देश प्रेम । मद—नशा ।
 न—मनवाला । निष्प्राण—(निः + प्राण विसर्ग संधि) जीव
 न । ढांचा—खाका । आघात—चोट । नवया भक्ति—नव
 वर की भक्ति दे हैं—ध्वज, ज्योतिन, स्वरूप, पाद सेवन, अर्पण,
 न दास्य, साख्य और आत्मसमर्पण नौरतन की चटनी—मसल
 लीना । तश्तुव—डाढ़, इपां । खुल—पैगम्बर । कलाम—
 वल । मज्जीद—कोरान शरीक ।

(पृष्ठ—१२५)

तरकीब—ढंग । आलमगार—औरङ्गजेब । पोलिटिकल—
 राजनैतिक । शुबह—संदेश । मज्जहबी—धार्मिक । संत—फकीर ।
 दृष्टि—(कु + दृष्टि—अव्ययी भाष समास) घुरी निगाह । मुली-
 त—तकलीक । दिन काटे—दिन बिताये ।

सूफी—सुफि को परमात्मा मय मानने वाले अद्वैतवादी ।
 अपरिचित—नावाकफ । अद्वैत—एकेश्वरवाद ।

(पृष्ठ—१२६)

दोगिराज—दोगियों के राजा । रसस्यन—पुल्लूमि । अजर—
 न मरने वाला । अजर—जो कभी बुढ़ा न हो । दंड—दंड । पर-

(पृष्ठ—१२४)

धनधन—(इन्द्र समास) तड़क भड़क । धावलो—धावण
 के धौलना के धार्मिक कृत्व विशेष । रत्ताबंधन—राखी बंधन ।
 कष्ट—नियानुसार । रामबाण (तपुखर समास) श्रीरामचन्द्र
 के शेर तोर । अन्याचारो—(अनि + आचार + ई) अन्यायो । वेधन
 —झेद कर, काट कर । राष्ट्रियता—अपना राज्य । उन्माष्टनी
 (उन्म + अष्टनी—दीर्घसंधि) भादा कृष्णपक्ष की आठवीं तिथि ।
 उन्मात्तव—(उन्म + उत्तव) उन्म का उद्घाट । परतंत्रता—
 राधांतता । सरिता—नदी । देश-भमता—देश प्रेम । भद—तगा ।
 रत्न—नतबाला । निष्प्राण—(निः + प्राण विसर्ग संधि) जीव
 मरे । टाँचा—खाका । आघात—बाँट । नवया भक्ति—नव
 वर की भक्ति ये हैं—धर्म, जीवन, स्वरूप, पाद भजन, अर्पण,
 दिन दास्य, सास्य और सामसमर्पण औरतन की चटनी—भसल
 गिना । तमस्तुव—डाह, हर्ष । रसज—पैगम्बर । कजान—
 बिल । मज्जीद—कोरान शरीर ।

(पृष्ठ—१२५)

तरकीब—उंग । आलमगोर—औरंगजेब । पोलिटिकल—
 जिनैतिक । मुषद—संघ । मजदूरी—धार्मिक । संघ—राजीर ।
 हृदि—(कु + हृदि + आरण भाव समास) हृदि निपाद । मुन्तो-
 द—तकलोक । दिन काट—दिन बिताये ।

लुकी—लुकी के पाना ना मर मानने वाले अईकदारी ।
 परिचित—आवर्तक । अईक—देकरकरछाद ।

(पृष्ठ—१२६)

ऐतिहास—ऐतिहास के राजा । रररर—मुश्किल । अरर—
 मरने वाला । अरर—हो कभी दुख न हो । रररी—रररी । रर-

(पृष्ठ—१२४)

येनयन—(इन्द्र सनात) तड़क भड़क । भावली—भावय
 है ईशना के धार्मिक हृन्व विशेष । रत्नावंधन—राखो बंधन ।
 केशव—नियानुसार । रामदास (तत्पुरुष सनात) श्रीरावन्द
 है ईश्वर । अन्याचारी—(अति + आचार + ई) अन्यायो । वेधन
 —वेद कर, काट कर । राष्ट्रोपना—अपना राज्य । जन्माष्टमी
 (जन्म + अष्टमी—दीर्घसंधि) भादा कृष्णपक्ष की आठवीं तिथि ।
 जन्मोत्सव—(जन्म + उत्सव) जन्म का उत्सव । परतंत्रता—
 पराधीनता । सरिता—नदी देव-ममता—देव प्रेम । नद—नगा ।
 नल—नतवाला । निष्प्राय—(निः + प्राय वित्तमं संधि) जीव
 गेन । दाँवा—लाका । आघात—घाट । नवधा भक्ति—नव
 प्रकार की भक्ति दे हैं—धर्म, जीवन, स्वरूप, पाद सेवन, अर्पण,
 वंदन इत्यादि । साख्य और आत्मसमर्पण नौरत्न की बटनी—मल्ल
 इत्यादि । तत्रस्तुव—डाढ़, इतना स्तुति—पूजण्वर । कलान—
 कथन । मज्जाद—कोरान शरीर ।

(पृष्ठ—१२५)

तरकोव—ठंग । आलमगोर—औरंगजेब । पोलिटिकल—
 राजनैतिक । शुद्ध—संशुद्ध । नवद्वयो—धार्मिक । संन—समीर ।
 हृदि—(कु + हृदि—अव्ययी भाव सनात) दुरी निगाह । मुनी-
 वन—तरुलोक । दिन काटे—दिन बिताये ।

हुरी—हुरी के परमान्ता मद मानने वाले, अहंनशादी ।
 अपरिचित—नायाबिक । अहंन—अहंकारवाद ।

(पृष्ठ—१२६)

रोगिराज—रोगियों के राजा । ररुखन—पुख्खन । अन्नर—
 न मरने वाला । अन्नर—जो कभी बुढ़ा न हो । रंदी—रैंडी । न-

मदन—पाव । नन्कार—धुर्त । चार्ज—अपराध । कुवत—
रहे ।

(पृष्ठ—१२६)

बन्ध—आपत्ति । तुर सनान—तिनका की तरह । सलनन—
रले । अधन—नीच ।

भारद्वरवल्ल—निलने की बाह ।

परार्थ—बहु विशेष का समय कौन सा है जिससे निलने की
बाह में हो दिल भटकता फिर ।

परार्थ—बहु शक्ति वस्तु देने हो मिल गयी ऐसे लैली का
गन्ध और दुलदुल को बननितान ।

(पृष्ठ—१३०)

पेवन—अधारी । वावरी—पगली । वान—रखे । कन—पति ।

परार्थ—अरी पगली रही अधारी को मद में क्यों भूलो रिखती
है यह नैहर तो दो दिन का है, अन्न में तो पति से ही
बान है ।

भाव यह है, कि संसारों विषय वानना में जीव अनिमान
करता है, पर उसे यह दिखार नहीं कि संसार में है दिन रहना है,
अन्ने में तो परमान परमाना से ही बान है, उसी में अन्न न
लगावे ।

मंदर—विवाह मंडप मंडप । परगुरी—दोरी । इल—
परी । सेनात—अन्न

परार्थ—(से अन्न परमाना) तेरी सूरत में किसी की सूरत
नहीं मिलना मैं संसार में तबसे तब रिखती है । परार्थ—संसार
में अन्न बहुत खोजा पर तेरे समान का नहीं मिला ।

तद्वन्—तब से । सन् नैहर—संसार का नैहर ।

विचार किया। औरंगजेब के अन्यायी न्यायकारियों ने फौसों का हुक्म दिया। पर इसमें क्या ? सरमद के लिए तो यह एक मामूली बात थी। वह तो अपने प्रीतम के वियोग में दुःखी था। वह तो प्रसन्न हुआ कि अब प्रीतम से जल्दी मिलन होगा।

सरमद का मिर तलवार से काट डुकड़ा कर दिया गया। वह अपने प्रीतम से जा मिलता। वह महान्मा हम लोक से विदा हो गया। पर अपना अनलहक का उपदेश दौड़ ही गया। सज्जन जन पराये के लिए कष्ट उठाने हैं। यदि वे कष्ट न उठावें तो उनकी परीक्षा कैसे हो ?

अन्याचार होता है जनता को दशाने के लिये पर उसका फल उल्टा ही होता है। अन्याचार से अमनता को वृद्धि होती है। रणद से चन्दन में भी आग उत्पन्न होती है। औरंगजेब के अन्याचार ने मरी हुई जाति में भी रक्त-संचार कर दिया। अकबर की कुटिल नीति चक्र में जो घेराव थे, औरंगजेब ने उनको सचेत कर दिया, निक्खल, मरहटे, राजपूत कमर बांध कर खड़े हो गये।

मतनामियों ने भी औरंगजेब के अन्याचारों को बड़ी बीरता से सामना किया और अग्नि में प्राण दियमर्जन कर दिये।

प्रश्नोत्तर

१ प्रश्न—औरंगजेब के शासन काल में हिन्दुओं की क्या दशा थी ?

उत्तर—औरंगजेब के शासन काल में हिन्दुओं का बाहरी तड़क-मड़क बढ़ी था, जो हिन्दुओं के शासन काल में था। हिन्दू अपने मना-पसन्दानुसार पृथक् पृथक् मनाते थे, पर वह नाम मात्र का था। जो स्थायिक हिन्दुओं का एक मूल में बांध था उसमें उम्र समय बहुत शक्ति नहीं रह गयी थी न हिन्दुओं के अग्रजित कर हिन्दुओं में फूट का बाजार बन गया। हिन्दू अपना गौरवना से एकदम

३ प्रश्न—देवते देखते विवाह की घड़ी आ गई। अब प्रीतिम सारमद के सिर में सिंदूर भरेंगे। उसके सिर में लाजिम की रेखा दाइंगी। ऐसे बड़े व्याह, फिर खुटकी से डरमा सिंदूर थोड़ा ही लगाया जायगा। प्रेम में भीने हुए मस्ती में चूर प्रेमियों की शादी। सर्पाङ्ग लाल करन होगा। खट्ठ-शृंगार किया जायगा। सरमद माथा से सिर नीचे किए, मकौच से निकुड़े हुए खड़ा है। प्यारे आकर हाथ से दुही पकड़ मुँह ऊपर उठा दिया, झट मिल गयीं, अंतर न रहा, बिछुड़े हुए मिल कर एक गये। जो तुम वही हम और जो हम वही तुम। ज ऐसी बात है फिर हम और तुम का भेद कहाँ !

उत्तर—सरमद की मौत का समय आ गया। अब परमात्मा मंग उनका व्याह होगा अर्थात् अब परमेश्वर से मिल होगा। इस व्याह में सिंदूर की जरूरत नहीं है, इस तलवार की जरूरत है। अर्थात् यह परमात्मा का मिल मौत के जरिये से होगा। हममें मय अंग नष्ट लाल करना होगा। सरमद मरने के तिये सिर नीचे किए खड़ा है, उसके हृदय में परमात्मा का प्रकाश फैल गया, उसके यह आभास होने लगा। मुझमें और परमेश्वर में कोई अंतर नहीं है। हमारा तुम्हारे में भेद नहीं अब मैं परमात्मा से मिलकर एक हो गया।

४ प्रश्न (क)—सरमद का विषय तो क्या जानते हो ?

(ख) श्रीगणेश न मारज न का मयाया ?

(ग) सरमद का अर्थ क्या था ?

उत्तर (क)—सरमद का अर्थ न मारज न का मयाया।

(ब) दादा सरमद को मेधा खिदमत किया करता था।
 इसलिए औरंगजेब ने मनभा था कि यह दादा का
 निब होगा। दादा को मरवाने के बाद औरंगजेब ने
 ऐसे भी मरवाने का विचार किया। उसको भय था कि
 बर्हि ऐसा न हो कि यह अपनी गति से मुझे किसी
 प्राणति में पानि दे। इसी भय से उन्होंने सरमद को
 मरवा डाला।

(ग) सरमद सूफी तालाब का था। कुछ मुसलमान वजार
 ऐसे हो गये हैं जिन्होंने अर्द्धत बाद का मचार किया है।
 सरमद भी अर्द्धत बादी था। यह बेचन परमात्मा को
 मानने वाला था। संसार में दादद पदायो को ध्यत-
 मय होकर था।

रह—“दाददाद दुनिया के हैं मेहरे मेरे शायरों के।

जिन्नों को पान है मय मय मुल्हा जंतु के।

शरीरक यह को बिसारे और बर बरा।

रह—महात्मा रामजीव अंगरेजों को मरे थे, वहाँ से प्रेसिडेंट ने
 जमाने कहा कि दादद कुछ मुझसे नीचिये। इसी के
 लख में दाददों के यह यह बरा था।

१४—अर्द्धत और मरदाना

— १५५

दाददाद दाददाद - दाददाद - दाददाददाद दाददाद ; दाददाद
 दाददाद दाददाद दाददाद - दाददाद दाददाद दाददाद दाददाद
 दाददाद - दाददाद दाददाद दाददाद दाददाद - दाददाद दाददाद दाददाद ।

ए मेरा भ्रान्त रहते हैं—कन पावाए करते हैं। आधर्य—
रहित। कन—नाराज ।

समयानुसार—समय के मुताबिक । मध्य मध्य—ठीक ठीक,
पर्याप्त । शून्य—विपरीत ।

इतिहास—निदिन, नीन । नीरथ—महत्त्व, दृष्टान्त । मानने हैं—
मानने हैं । संवाद—पद्याष्टाष्ट, श्लोक । निदिन—निदिन्या, इतिहास ।
इतिहास—नीरथा पर्यंत ।

(77-1:1)

बाँ लगे—बाँ लगे मे । गिरा—गिरा । मुँह देखी बाँ
 लगे बाँ लगे— गिरा देा लगे बाँ लगे मे गिरा लगे मे
 गिरा लगे बाँ लगे मे । गिरा—गिरा । गिरा—गिरा ।
 गिरा—गिरा । गिरा—गिरा । गिरा—गिरा ।

पुनः—पुनः । होम—होम । विद्वत्पुत्रः । कर्तुं—करने ।
 होम—होम । पुनः—पुनः । होम—होम । होम—होम ।
 पुनः—पुनः । होम—होम । होम—होम । होम—होम ।
 पुनः—पुनः । होम—होम । होम—होम । होम—होम ।

10-1-48

[illegible]

7-17

[illegible]

उसे तो इसी में आनन्द है, संतोष है कि यह अपना कर्त्तव्य पालन कर सकता है ।

अतः मनुष्य का यह कर्त्तव्य है कि सत्य को सब से ऊँचा स्थान दे, इसके लिये चाहें हमें कितना भी कष्ट सहना पड़े, कितनी भी हानि उठानी पड़े । सत्य बोलने से ही समाज में हमारा सम्मान होगा । सदा सत्य बोलने से ही कर्त्तव्य का पालन होता है । महा-राज हरिश्चन्द्र ने सत्य का पालन किया इसके लिये उन्हें अनेक कष्ट सहने पड़े फिर भी उनका यह प्रण—

“ चन्द्र टरै सूरज टरै टरै जगत व्यषहार ।

पै हृद ओहृदिन्द्र का टरै न सत्य विचार ॥ ”

ख गया । वे संसार में ही नहीं किन्तु परलोक में भी मान्य हुए । अतः सदा सच बोलना चाहिये । इसी से हम अपना कर्त्तव्य पालन कर लेंगे और सदा संतुष्ट और सुखी रहेंगे ।

प्रश्नोत्तर

१ प्रश्न—कर्त्तव्य यह वस्तु है जिसे करना हम लोगों का परमधर्म है और जिसके न करने से हम लोग और लोगों की दृष्टि से गिर जाते और अपने कुचरित्र से नीच बन जाते हैं । प्रारंभिक अवस्था में कर्त्तव्य का करना बिना द्वाप से नहीं हो सकता, क्योंकि पहले पहल मन धाप ही उसे करना ही चाहता । इसका आरम्भ पहले घर से ही होता है क्योंकि यही लड़के का कर्त्तव्य माता-पिता की ओर और माता पिता का कर्त्तव्य बड़का की ओर देख पड़ता है । इसके अनतिरिक्त पढ़ना, व्यापार-सेवक और स्त्री पुरुष के भी परस्पर अनेक कर्त्तव्य हैं । घर के बाहर हम मित्रों, पड़ोसियों और राजा प्रजा के परस्पर कर्त्तव्यों को देखते हैं । इसलिये समस्त म. मनुष्य का

ओर ही कर्त्तव्य दिखायी पड़ता है। इसी कर्त्तव्य का पूरे तरीके से पालन करना हम लोगों का धर्म है। कर्त्तव्य पालन से ही हमारे जीवन की जीमा बढ़ती है। पर इस कर्त्तव्य का करना न्याय के ऊपर निर्भर है। यदि उस न्याय को हम समझ लें तो हम सहित उस कर्त्तव्य का हम पालन करने लगे।

(ख) देखो पाठ का सारांश :

(ग) परमधर्म—परम + धर्म. कर्मधारय समास।

कुत्रचित्—कु + चत्ति अव्ययी भाष समास।

पति-पत्नी—पति और पत्नी द्वन्द्व समास

धर्मपालन—धर्म का पालन तत्पुरुष समास।

१६—साहित्य की महत्ता

(पृष्ठ—१५०)

शब्दार्थ—ज्ञान-राशि—(ज्ञान को राशि. तत्पुरुष समास)
ज्ञान का देर। सचित—इच्छित किया हुआ। कोश—खजाना।
भाषा—विचारों। निदोष—(निः + दोष) दोष रहित। रूपवती—
सुन्दरी, रूपवाली। निखारिनी—भोज माँगने वाली। आदरणीय—
सम्मान के योग्य। धो संवसन्ता—देशवर्ध। मान मदादा—
(मान और मदादा. द्वन्द्व समास)। सम्मान और महत्व। अव-
लंबिन—आधिन।

पृष्ठ—१४१

जाति विशेष—किसी खान जाति के। उद्यत्पुरुष—उद्यति
अवनाति। उद्य-लोच भाषा—भले वुरे विचारों। सगठन—एकता।
ऐतिहासिक—इतिहास सम्बन्धी। घटनाचक्र—वाक्यान्तों राज-

--शक्ति । सत्ता—अधिकार, तत्त्व । उद्भयन—उद्भति । पदाक्रान्त—पद दलित । संजीविनी—मृतक को दिलाने वाली । आकर—खान । उन्मिन्—उठे हुए । संवर्धन—वढ़ती । अज्ञानांधकार—अज्ञान रूपी अंधेरे । गर्त—गढ़ा । अस्तित्व—स्वत्व । महत्व—शाली—मर्यादापूर्ण । अभिवृद्धि—(अभि—वृद्धि) कर्मधारय समास) वढ़ती । अनुपम—मैन । समाज श्रेणी—समाज का श्रेणी । देश श्रेणी—देश का श्रेणी । जाति श्रेणी—जाति का श्रेणी । कि वहुना—अधिक क्या । आन श्रेणी—निज श्रेणी । आन होता—आन हुता करने वाला ।

(पृष्ठ—१४४)

समृद्ध—उद्भत । देशधन—सम्पत्ति । अनुत्त—अधिकार । स्थापित—कायम । विज्ञित—जाता हुआ । जेता—जानने वाला । उत्पादन—रचना । वृद्धि—वढ़ती । मंद—धीमा । अस्थानाधिक—अप्राप्तिक । अनैतर्गिक—अप्राप्तिक । अष्टादन—उत्कृष्ट । विर—वहुत । काल—समय । माया जाल—झाड़व्वर । अभिवृद्धि—वढ़ती । ग्रंथ रचना—पुस्तक लिखना । साधक—कार्य को करने वाला । वृद्धांत—अंतिम । निःसहाय—निरावलम्ब । निरपाद—उपाद हीन ।

(पृष्ठ—१४५)

निर्धन—शक्ति । सुधृष्ट—परिचय । अधन—नीच, पतित । हृतधता—किये गये उपकार के न मानना । अदधित—दार को शुद्धि के लिये किया गया कार्य ।

ज्ञानाज्जन—ज्ञान पैदा । ज्ञेय—ज्ञान । ज्ञान—ज्ञान । अधन—वृद्धि उपकार — अज्ञान कलह । अधन—मंद । लोच भाषा—लोचभाषा की भाषा । शिष्टा—शिवानी, निगाही ।

सत् साहित्य की आवश्यकता है। यह बात निर्विवाद सिद्ध है कि मास्तिष्क का विकास अच्छे साहित्यों द्वारा ही होता है। यदि हम चाहते हैं कि जीवित रहें, संसार की अन्य जातियों की समता करें तो हमको चाहिए कि परिश्रमपूर्वक अपने प्राचीन साहित्य की रक्षा तथा उसे परिवर्द्धित तथा उत्पादित करें।

साहित्य में वह शक्ति है, जो नैतिक, सामाजिक आदि बड़े बड़े परिवर्तन कर डालती है। और देशों तथा जातियों के देखने से यह बात स्पष्ट होना है। यूरोप में धार्मिक रुढ़ियों को साहित्य ने ही उखाड़ फेंका है, जातीय स्वतन्त्रता को बीज उसने ही बोया है, व्यक्तिगत स्वतन्त्रता को उसने ही पाला पोसा है। फ्रांस में प्रजा सत्ता की वृद्धि तथा उत्पत्ति उसने ही की है। इटाली का स्त्रि उसने ही ऊँचा उठाया है। साहित्य मुर्दे दिल में भी रक्त का संचार करता है, पतितों को उठाता है, उन्नतों को और भी उन्नत करने वाला साहित्य ही है। साहित्य के उत्पादन तथा वृद्धि के लिए जो जाति प्रयत्न नहीं करती, वह अपना अस्तित्व ही खो देती है। अतः समर्थ होकर भी जो व्यक्ति साहित्य की उन्नति नहीं करता वह समाज द्रोही, देश द्रोही तथा जाति द्रोही है। उसे आत्म द्रोही तथा आत्मघातक कहने में भी कोई आपत्ति नहीं।

शक्ति शाली भाषा भी दूसरी भाषा पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लेती है। राजनैतिक प्रभुत्व के कारण भी विजितों की भाषा पर जेताओं की भाषा अपना प्रभुत्व जमा लेती है। पर यह स्थायी नहीं रहता, जिस समय विजित जाति की निद्रा खुलती है, वह दूसरी भाषा के प्रभुत्व को दूर कर देती है। वह अपनी भाषा में नये प्रयोगों की रचना करके अपने माँहि रक्त वृद्धि करती है।

विदेशी भाषा भी पढ़ना चाहिए, पर अपनी भाषा की वृद्धि, उत्पादन आदि का सदा ध्यान रखना चाहिए। अपनी ही भाषा के

साहित्य की प्रधानता देनी चाहिये। अपने देश तथा जाति की उन्नति अपने साहित्य की उन्नति पर निर्भर है। अतः अपनी भाषा के साहित्य की सेवा करना परम कर्त्तव्य है।

प्रश्नात्तर

१ प्रश्न—ज्ञान राजि क संयुक्त राज ही का नाम साहित्य है।
 सत्य तरह के प्रकट करने का साम्यता रखने वाली और निर्दोष होने पर भी यदि कोई भाषा अपना निज का साहित्य नहीं रखता तो वह स्वयं को मिथ्यापन की तरह, कदापि आदर्शनीय नहीं हो सकती। उसकी शोभा उसकी ही संपन्नता, उसकी मान मर्यादा उसके साहित्य ही पर अवलम्बित रहती है। ज्ञान विज्ञान के उक्तवचन, उमङ्ग इस नाम भाषा का, उसके धार्मिक विचारों और सामाजिक संगठन का, उसके ऐतिहासिक घटनायक और राजनैतिक स्थितियों का प्रतिबिम्ब देखने का कदापि भ्रम न रहना है तो उसके अर्थ साहित्य में मिल सकता है, सामाजिक शक्ति या सशक्तता सामाजिक अज्ञान या निर्धनता और सामाजिक सम्पत्ति तथा समृद्धता का निर्णायक एक माप साहित्य है।

(क) उपर्युक्त बात का मत स्पष्ट-रूप से लिखो।

(ख) निम्नलिखित बातें ध्यान में रख कर इस प्रश्न को उत्तर दीजिए—
 क्या साहित्य केवल भाषा के अन्तर्गत ही रहता है या इसके अतिरिक्त अन्य बातें भी सम्मिलित होनी चाहिये ?
 यदि हाँ तो वे कौन-कौन सी बातें होंगी ?
 यदि नहीं तो क्यों नहीं ?
 क्या साहित्य केवल भाषा के अन्तर्गत ही रहता है या इसके अतिरिक्त अन्य बातें भी सम्मिलित होनी चाहिये ?
 यदि हाँ तो वे कौन-कौन सी बातें होंगी ?
 यदि नहीं तो क्यों नहीं ?

हैं, तथा वह निर्दोष भी हैं, पर यदि उसका अपना साहित्य नहीं है तो उसका आदर वैसा ही होता है, जैसे रूप संपन्न निखारिणी का । भाषा की सुन्दरता और मान मर्यादा उसके साहित्य पर ही अप्रज्वलित है । किसी भी जाति के उन्नति अधनति, ऊँच नीच भाष, धार्मिक विचार, समाज-संगठन, ऐतिहासिक घटनाओं के उलटफेर का तथा राजनैतिक स्थितियों का प्रतिबिम्ब देखने को यदि कहीं मिल सकता है तो उस भाषा के साहित्य ग्रन्थ में ही । समाज की शक्ति या उसकी लज्जोपना, समाज की कमजोरी या निष्पाट समाजिक सम्बन्धता तथा अस्तन्व्यता का पता उसके साहित्य से ही लग जाता है ।

(ख) उत्कृष्टोपकर्ष—उत् + कर्ष + अप + कर्ष—अप्यदी भाष समास, दीर्घ संधि—ऊँच नीच ।

संगठन—सम् + गठन—अप्यदी भाष समास—एकत्रित ।

प्रतिबिम्ब—प्रति + बिम्ब—अप्यदी भाष समास—छाया, परछाई ।

निर्लोचना—निर् + लोच + क्त—अप्यदी भाष समास, कर्त्तृ का 'क्त' प्रत्यय निष्पाट ।

निर्लोकक—निर्ल + कृत + क्त—अप्यदी भाष समास, कर्त्तृ का 'क्त' प्रत्यय निष्पाट ।

। ग दत्ता पाठ का सारा

(११४)

१७—उसने कहा था

(पृष्ठ—१४२)

जवान कान पक गये हैं—उसकी बानें सुनते सुनते परे-
ज्ञान और दुःखी हो गये हैं ।

(पृष्ठ—१४१)

यमूहार्थ वाक्यों.....जगाये—इनकी बांती सुने । छोड़े की
नाली.....कट्ये हैं—घाड़े की नाली को पेसी गाली देते हैं जिसमे
रिस्ता आदिर हों । बाँधेंतारस खाते हैं—राह बजते दुपों
को ही बाँधा बनाते हैं और अकमोस करते हैं । ग्लानि—दुःख ।
सोम—पश्चात्ताप । आक्रमण जी—दूजर, सरकार । बाइ—बाइ-
शाह । समष्टि—समूह । मीठी लुरी की तरह महीन मार करनी
—छुट्टी शब्दों का प्रयोग करते हैं ।

(पृष्ठ—१४३)

केज—बात । परवेगी—विवेगी । गुण रहा था—जइ मगइ
रहा था ।

निबटा—सुही पाया ।

(पृष्ठ—१४०)

संभावना—अंशा विरुद्ध इतरा । ग्राहू—ग्राह । विप्लवा
—विप्लु के मानने वाला । अज का इर्मात्र पायी अथा बना ।
लंका—लंका । लंका के राजा के लो हैकी ।

.....

कहना है कहना है कहना है कहना है कहना है
कहना है कहना है कहना है कहना है कहना है
कहना है कहना है कहना है कहना है कहना है

उस लड़के का नाम लहनासिंह था, और यह पलटन में भर्ती हो गया था। लहनासिंह छुट्टी लेकर अपने मुकदमे की पैरवी में घर गया था। यहाँ उसको उसके रंजोमेंट के अफसर की चिट्ठी मिली की फौज लाम पर जाती है, फौरन चले आओ। साथ ही उसकी पलटन के सूबेदार हाजारासिंह की भी चिट्ठी मिली कि मैं और बोधसिंह भी लाम पर जाते हैं, चलते समय हमारे घर होते जाना। साथ ही चलेंगे।

सूबेदार का गाँव लहनासिंह के रास्ते में ही पड़ता था। और सूबेदार उसे बहुत मानता था। लहनासिंह सूबेदार के यहाँ जा पहुँचा।

जब लाम पर चलने लगे तब सूबेदार ने कहा लहनासिंह तुम को सूबेदारिन पुजा रहों है, जा मिल आ। लहनासिंह भीतर गया। सूबेदारिन को प्रणाम कि उसने असीस दी। सूबेदारिन ने पूछा क्यों लहनासिंह तुमने मुझे पहचाना।

लहनासिंह ने कहा—'नहीं'।

सूबेदारिन ने कहा—तेरी सगार हो गयी, धब्बल हो गयी, देखते नहीं देखती साहू, यह कह असुखतर वाली घटना का याद दिलाया।

लहनासिंह ने कहा—हाँ पहचाना।

सूबेदारिन ने कहा—लहनासिंह ! मेरी एक बिनगी है, जिन तरफ से तुमने मेरे घर अशुभस्वर में बजाये थे, उसे ही मेरी इन पति पुत्रों का श्राद्ध करना। मेरे कार लड़के में यही एक लड़का है, इन दोनों की रक्षा करना यही मैं तुम से निष्ठा माँगती हूँ।

हाजारासिंह लहनासिंह आदि लाम पर भेज दिये गये। वे शीघ्र में एक पत्नी में काँ दिये से पड़े थे। देखते नहीं देखते

मारी गंदक दिख जाती है और मी मी गज घरी
उड़ान पड़ती है। हम गीरी गोले से कोई बचे तो जायें।
नगर कोट का जलजला रुना था। वहाँ दिन में गयोस
जलजले होते हैं। जो कहीं गंदक से बाहर साफ या
बुढ़नी निकल गई तो घड़ाम से गोली लगती है। न
मात्रम बेरमान मिट्टी में लगे हुए हैं या घाम की पत्तियों
में लिपे रहते हैं।

उत्तर—प्रि. प्रि. हमें भी जहाँ कहते हैं। दिन रात सारा में बैठे बैठे शरीर की दृष्टि जकड़ गयी। यहाँ एक तो सुविधाने में हम गुना जाड़ा है, हमारे पचां और यहाँ अलग गिरते हैं। घंटे दो घंटे पर मोती के अवाज में कान के पद कटने लगते हैं। तथा सारा दिन उठती है, और जमीन नी नी गम उछलने लगती है। हम गम के मोती में यदि कोई जोड़ा बने तो लड़े। अगर कोई का मूक्य सुना मर या। पर यहाँ तो मोती के मारे २० बार मूक्य हुआ करता है। जरा सा भी मूक्य में बाहर गम या कोहनी निकली नहीं मोती खती। माथूम नहीं वे मोती खताने वाले बेमान मिट्टी में सेते हैं या पल में दिने हैं।

[illegible]

होने पर तरस खाते हैं, कभी उनके पैरों की अँगुलियों के पोरों को चौंध कर अपने ही को सताया हुआ घाताते हैं और संतार भर को ग्लानि, निराशा और सौम के अघ-तार घने नाक की सीध चजे आते हैं, तब अमृतसर में उनकी दिरादरी वाले तंग चढ़ादार गलियों में हर एक लड़के वाले के लिए ठहर कर सत्र का समुद्र उमड़ा कर, बच्चे खालसा जी, हथो मारि जी। ठहरना मारि जी, जाने दो जाला जी ' हथो घाद्या ' कहते हुए सरेद फेंकें, खशरों और बतकों गंगे और खोमवे और भारे वालों को अंगज से राह लेते हैं। मशाल है कि जी और साहय बिना सुने किसी को हटना पड़े, यह बात नहीं कि उनकी जीम चलता ही नहीं, चलती है, पर मीठी दुरी की तरह महीन मार करती है।

उत्तर—जो लोग पड़े पड़े गहरों के इकट्ठा गाड़ी वालों को अघान सुन कर पड़ड़ा गये हैं। उनसे हमारा भिन्न है कि अमृतसर के बन्धुकाट वालों को अघान का भी उरा नमूना देखें। अब पड़े पड़े गहरों को चौंधो नदियों पर यह हाल है कि पोरों के चायुध में धुन्ने हुए इक्के वाले कभी पोरों की नगों में अपना पनाह करते हैं, कभी यह चलते हुओं को अंधा बना कर उन पर राह करते हैं, कभी उनके पैरों को दुपल कर करते हैं कि नाग डाला जान ल गिया। इन प्रकार से अपने को मरणा हुआ बताते हुए पछाताते, निरुत्साह का रूप जो एक सीध में बने जाते हैं। तब अमृतसर में इस बात पर एक लड़के वाले के लिए ठहर कर सत्र का समुद्र उमड़ा कर, बच्चे खालसा जी, हथो मारि जी, ठहरना मारि जी, जाने दो जाला जी ' हथो घाद्या ' कहते हुए सरेद फेंकें, खशरों और बतकों गंगे और खोमवे और भारे वालों को अंगज से राह लेते हैं। मशाल है कि जी और साहय बिना सुने किसी को हटना पड़े, यह बात नहीं कि उनकी जीम चलता ही नहीं, चलती है, पर मीठी दुरी की तरह महीन मार करती है।

स्थापना—प्रतिष्ठा । स्वमुख—अपने मुख । राज्यक्रान्ति—राज्य में
रूलट फेर । कारागृह—जेलखाना ।

(पृष्ठ—१६७)

अद्वितीय—वे जोड़, जिसके समान दूसरा न हो । सर्वमान्य—
सब के माननीय । निर्माण—रचना । आधार—सहारा, अवलंब ।
जोड़—थरावरी । पश्चिमी—पैरोपियन । पश्चात्—(अव्यय) बाद ।
अवतार—उत्पन्न । व्यवस्था बांधि—नियम बद्ध किया । अलौ-
किक—अपूर्व । सहाद्रि पर्वत-परंपरा—सहाद्रि पर्वत के माला ।
धन-धान्य-समृद्ध—(अव्ययो तत्पुरुष समास) ऐश्वर्य संगम ।
पेहिले—शारीरिक । पराकाष्ठा—चरम सीमा । व्यापार केन्द्र—
रोज़गार का मुख्य स्थान । राज प्रसादों—राज भदजाँ । संरक्षकों—
तालाबों । उद्यानों—बगीचों । शोकास्थलों—विहार स्थान ।
परिपूर्ण—भरा पूरा ।

(पृष्ठ—१६८)

चक्रवर्ती—चक्रवर्ती उस राजा को कहते हैं जिसके राज्य में
सूर्य अस्त नहीं होता, सारे पृथ्वी का राजा । घाक ईंठी घी—
प्रभाव था । लोहा मानना—घरा होना । गर्व—घमंड । गर्हित—
घमण्डो । विलासी—पेय्याश । दुराचारी—पापी । कुमारियाँ—
बालिकाएँ । रंगमहल—विहार भवन । अस्त—न सड़ने योग्य ।

(पृष्ठ—१६९)

अंतः कलह—भीतरी झगडा, घरेलू झगडा । अमानुषी—
अप्राकृतिक । अष्ट—नष्ट ।

निरीक्षण—अवलोकन । नयनों—नेत्रों । हिये—हृदय । नयनों
के साथ हिये के भी अंधे—नेत्र के अंधे और हृदय के काले ।
प्रत्यक्ष—साक्षात् । प्रतिमा—मूर्ति । साधो—सती. सचरित्र ।
दृष्टान्त—उदाहरण ।

(पृष्ठ—१७२)

अधिकारी—हकदार । गहन—गूढ़ । दृढान्त—उदाहरण
 धनुर्विद्या—(धनुस्+विद्या—पित्तर्ग संधि) बाण चलाने की
 विद्या । गणना—गिनती । समाज ग्रंथाला—समाज बंधन ।

तात्पर्य—मतलब, अभिप्राय । रत—संलग्न । आत्यंतिक—
 सीमा से परे, परले दर्जे तक । हेतु—कारण ।

विलक्षण—विचित्र । भाष—विस्तार ।

(पृष्ठ—१७३)

प्रतिकार—वहिष्कार । यथाशक्ति—(अव्ययी भाष समास)
 ताकत भर । आत्मबलिदान—आत्मत्याग । सीमा—हद । संतप्त—
 दुःखी । लुब्ध—खिन्न ।

रूप—अंधेरा, काला । पर्जन्यवृष्टि—बड़ी जोर की वर्षा ।
 विघुहता—विघट्+लता—व्यञ्जन संधि, विजलों । नगर—
 निवासी—दस्तों के रहने वाले । बनजारों—घूम फिर कर रहने
 वालों, एक स्थान में न रहने वाले । सहृदय—सुन्दर हृदय,
 दयालु । अस्तित्व—सत्ता, विद्यमानता । आर्य-संस्कृति—
 आर्य पवित्रता, आर्य संस्कार । निष्कण्ट—निरद्वन्द्व । समोर—
 वायु, हवा । निष्पाप वायु मंडल—पाप शून्य वायु मंडल । अनुज—
 असीम, अपार । पराक्रमी—दलबान ।

(पृष्ठ—१७४)

शरीर सामर्थ्य—शारीरिक शक्ति । मह विद्या—पहलवानों
 कुश्ती लड़ने का हुनर । प्रवीण—बुद्धिमान । अप्रवीण—बुद्धिहीन, नेता ।
 काल रूप—काल के समान, मृत्यु के समान । स्थल—पृथ्वी ।
 नम—आकाश । आविर्भूत—प्रकट । ज्ञान विद्या—माया
 फैलायी ।

आग बहूला—अत्यन्त क्रोध । अघ्नं पूरं—अघ्न के भरा

वर्तमान—इस समय की। मूल—जड़। रहस्य—मर्म।
 गंदा—संदेह। परिणाम—फल, नतीजा। दशमिचारिणी—दुरा
 चारिणी। वर्णसंकर—दोगाली। सोचनीय—चिन्तनीय। दुराचारी
 —अप्याचारी। परापहारी—पराये का हरण करने वाला।

(पृष्ठ—१८०)

बुद्धियाद्—वह बात जो बुद्धि के विचार से समझ में
 आवे मानना। रत—संलग्न। अज्ञात जन्—जिसका कोई शत्रु
 न हो।

ज्ञानामृत—ज्ञानमुधा। अविच्छिन्न—जिसका निवेदन हो।
 प्रापिस्थिति—हाजत, दशा। निर्माण—रचना। मुखमस्तीति
 दूरीकी—जो कुछ मुँह में आवे वह कह डालना, कि इस हाथ की
 दूर होती है। चरितार्थ—घटाया।

(पृष्ठ—१८१)

आक्रमण—घावा, हमला। धर्मत्रय—धर्मच्युत। अंतःफलद्—
 गृहयुद्ध। सत्सैन्य—सेना सहित। दालन्यकाज—गुजामी का
 समद। सहन्र—द्वार। सामर्थ्य—शक्ति। अशर्तार्थ—उत्पन्न,
 पैदा हो कर। दिग्दिगंत—देश विदेश, चारों ओर, सम्पूर्ण संसार
 में। कीर्तिपताका—यशस्वजा।

(पृष्ठ—१८२)

अलीकिक—अपूर्व। मात्रा—परिमाण। प्रभाव—महिमा।
 केन्द्रघटना—जीवन घटनाओं की मुख्य घातें। साधनें—
 उपायों। व्यक्तिगत—एक व्यक्ति का। दिव्य—अलीकिक।
 समकालीन—इसी समय के। निःस्पृह—निर्जैन, ध्यानता
 रहित।

निष्कलंक—कलंक रहित। आरोपण—जगाया। कष्टहरण

गोप महद् विद्या में बड़े प्रवीण थे । श्रीकृष्ण उत्तमों उनके
अग्रणी हुए । दिन दिन गोपों और गोपाल का बल
बढ़ने लगा । अंत घबरा उठा । उसे सर्वत्र काल रूप
कृष्ण दिखाई देने लगे । जल में, स्थल में, नम में, सर्वत्र
श्रीकृष्ण की काल-मूर्ति आविर्भूत हो कर उसे डराने
लगी । कृष्ण को मारने के लिये कंस ने जाल विद्याया,
पर उत्तमों यह ध्राप ही जा फँसा और मारा गया ।

उत्तर—भादों कृष्ण अष्टमी की रात को रोहिया नक्षत्र में बड़े जार की वृद्धि हो रही थी, बिजली बंध रही थी, उसी समय श्रीकृष्ण का जन्म हुआ। उसी रात में ही बलुदेव श्रीकृष्ण को अपने मित्र नन्द के यहाँ गोकुल में पहुँचा आये। ये गोप ये कौन! ये दादू बनो सखी ये। इन्होंने अपना पैसा छोड़ कर धर्यों का पैसा बनने लगे थे। अतः ये दैत्य सखिये दोनों थे। यदि इनमें शत्रुता हो तो कोई आश्चर्य जो बात नहीं है। ये नगर में नहीं रहने थे। नगरों से दूर अपनी गाँवों की लैकर कामों यहाँ कामों यहाँ रहा करते थे। ये धनजोरों के समान रहने थे। ये स्वभाव से बड़े सीधे थे, ये दयालु तथा ईश्वर भक्त थे, पर इनमें आर्यों का सम्मान नहीं रह गया था, ये धर्म-धर्म का पालन नहीं करते थे। येने ही लोगों में श्रीकृष्ण पले बाँध दाने जगे मने के मिथ्या प्रेम, दोनों का स्वच्छन्द वायु तथा गर्माहं मान पातक्य मरुतों ने सुन्दर नरान धरा श्रीकृष्ण को अपार पचा-कमी तथा निश्चल प्रेमी बना दिया। पालकाल में ही नारीरिक बल से अकृष्य कार्य कर दिखाये। मोर नक्षत्र

धर्म के सहारे । भागवत् सम्प्रदाय—भागवद् में कथित सम्प्रदाय ।
 नवीन—नया । विकास—प्रादुर्भूत । अनुयायी—अनुगामी । लोक
 धर्म—संसार धर्म । उदामीन—विरक्त । समाज व्यवस्था—समा-
 जिक नियम । ज्ञान विज्ञान—शास्त्रादि । विराधी—वैरो । द्वितीय—
 दूसरा । घोर—विकट । नैराश्य—नाउमेदी, निराश । विषम—
 अयुग्म, विकट । स्थिति—ज्ञानत । मार्मिक—अद्भुत । साधन
 —उपाय, प्रयत्न । संतुष्ट—मगन शान्त । अन्याचारियों—अन्या-
 यियों । दमन—मर्दन, नाश । विनाश—संहार । स्थापित—
 कायम । भारतीय—हिन्दुस्तान का । विरुद्ध—विजात । सगुण
 —गुण सहित, नागर । निर्गुण—निराकार ।

प्रथम वर्ण—पहले दर्ज । परंपरा—क्रमगत । वेदशास्त्र—
 वेद शास्त्रों के जानने वाले, तन्त्रज्ञों ।

आचार्यों—उपाधियों । प्रवर्तित—रखाया हुआ । सम्प्रदाय—
 दल । आधार—अवतार, सहारा । लोक धर्म-रक्षक—लोक
 के धर्म को रक्षा करने वाले, तत्पुरुष नमान । लोक रक्षक—लोक
 को प्रसन्न करने वाला तत्पुरुष नमान स्वर्ग—आकाश ।
 नैराश्यमय—नाउमेदी से भरा । सुधारण—अमृत के रस ।

(१४८—१४९)

नैराश्य-हित नाउमेदी से रक्षा हुआ (तत्पुरुष नमान)
 लिखता—लिख । प्रवृत्ता—प्रवृत्ता । लोक आधार व्यापी—
 संसारो कायों में गत । न-रमय—कल्याणमय । अमृत—अमृत ।
 संसार—प्रवर्तित । निराश—नाउमेदी ।

आशय—सहारा । उत्तार—हृदय में निक्षेपित ।

प्राज्ञता—पुष्ता । प्रदान की—दी । मान्य—महान्तर ।

सारांश

जित समय हिन्दुस्तान में मुसलमानों का पृथक् रूप से राज्य स्थापित हो गया, उस समय से चारों ओर की धीरे-धीरे मान्यता हो गई। हिन्दु कविता का प्रवाह राजकीय क्षेत्र में हट कर, भक्तिपथ और प्रेम पथ की ओर चल पड़ा। बल पराक्रम की ओर से हट कर मानव की ओर लग गया। यह समय देश के नैराश्य का था। निराशा भगवान् की शरण के अन्य कोई अवलम्ब न था। रामानन्द स्वामीचार्य ने जिस भक्ति रस का संवर्धन किया उसी दो कबीर सुरदास ने जन्ता के बीच प्रवाहित किया। मुसलमान कवियों ने प्रेम पथ की मनोहरता दिखा कर लोगों का मन लुभाया। इस भक्ति तथा प्रेम के रंग में देश अपना दुःख भूल गया।

उस समय भक्तों के दो दर्ज थे। एक दर्ज प्राचीन धर्म के नवीन विकास का ही अनुयायी था। और दूसरा लोक धर्म में विश्वास समाप्त व्यवस्था तथा ज्ञान विज्ञान का विरोधी था। यह दूसरा दर्ज जिस घोर नैराश्य काज में डूबा हुआ उसके सामंजस्य साधन में रुस रहा। उसी उन्माद की श्रृंखला प्रहार करने का साहस हुआ। जितना मुसलमानों के यहाँ भी स्थान था। मुसलमानों के रंग रह कर इन दर्ज के महा-त्माओं का भगवान् के उन रूप पर उनका ही भक्ति की लो जलने का साहस नहीं हुआ जो बाद में 'सूर' का समकालीन है। दुर्लभ का संहार करना है। बाद में करने का वह में नसल नहीं हुए।

पहला दर्ज ने प्राचीन धर्म का ही नवीन विकास भक्ति मार्ग का अवलम्बन किया। भगवान् के उन रूप को उनका ही मान्यता, जिस रूप से भगवान् दुर्लभ का समकालीन हैं, तथा धर्म की स्थापना करते हैं। मुसलमानों ने इसी भक्ति के लुप्त रूप में सौंदर्य



कर भक्ति पथ और प्रेम पथ की ओर चल पड़ा । देश में मुसलमान साम्राज्य के पूर्णतया अस्तित्व हो जाने पर धीरोन्माद के यह स्वतन्त्र क्षेत्र न रह गया । देश का ध्यान अपने पुनराधे और यत्न पराक्रम का ओर से हट कर भगवान् की भक्ति तथा देश-दाक्षिण्य की ओर गया । देश का यह नैराश्य काल था जिसमें भगवान् के सिवा और कोई सहारा नहीं दिखाई जाता था । रमानन्द बहुभाचार्य ने जिस भक्ति रस का प्रभूत्व स्तव्य किया । कबीर और मूर आदि को साधारा ने उसका संचार जनता के बीच किया । साथ ही कुतबन, जायसी आदि मुसलमान कवियों ने अपनी प्रबंध रचना द्वारा प्रेमपथ की मनोहरता दिखा कर लोगों को लुभाया इस भक्ति और प्रेम के रंग में देश ने अपना दुःख भुजाया, उसका मन बहला ।

उपरोक्त पथ के सरल हिन्दा में लिखा ।

हमीर के शासनकाल के समाप्ति के साथ ही चरखों की वार गुलगाथा का समय समाप्त होता है । उस समय हिन्दी कविता की छाया राजनैतिक क्षेत्र से हट कर भक्ति तथा प्रेम पथ की ओर प्रवाहित हुई । देश में मुसलमानों का पुनराधे राज्य स्थापित हो गया । धीरोन्माद के लिए स्वतन्त्र भाग हो नहीं रह गया । अतः देश का ध्यान अपने पुनराधे और यत्न पराक्रम की ओर से हट कर भगवान् की भक्ति रस तथा उदारता की ओर गया । यह देश के लिए नैराश्य का समय था । उसे सिवा भगवान् के अवलम्ब के और कोई सहारा ही नहीं था । रमानन्द तथा बहुभाचार्य के संचित भक्ति रस का

गोप मह विद्या में बड़े प्रवीण थे । धीरुष्ण उसमें उनके
अग्रणी हुए । दिन दिन गोपों और गोपाल का बल
बढ़ने लगा । कंस घबरा उठा । उसे सर्वत्र काल रूप
रुष्ण दिखाई देने लगे । जल में, स्थल में, नभ में, सर्वत्र
धीरुष्ण की कालभूति आविर्भूत हो कर उसे डराने
लगी । रुष्ण को मारने के लिये कंस ने जाल बिछाया,
पर उसमें वह प्राप ही जा फँसा और मारा गया ।

उत्तर—मादों रुष्ण आमा की रात को रोहिया नक्षत्र में बड़े जोर
की घृति हो रही थी, पिजली कंध रही थी, उसी समय
धीरुष्ण का जन्म हुआ । उसी रात में ही वसुदेव
धीरुष्ण को अपने मित्र नन्द के यहाँ गोकुल में पहुँचा
आये । ये गोप ये कौन ? ये यादव वंशी क्षत्री थे । इन्होंने
अपना पैसा छोड़ कर वैश्यों का पैसा करने लगे थे ।
अतः ये वैश्य लक्ष्य दोनों थे । यदि इनमें शुद्र भी हों
तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है । ये नगर में नहीं रहते
थे । नगरों से दूर अपनी गौरों को लेकर कभी यहाँ कभी
वहाँ रहा करते थे । ये धनजोरों के समान रहते थे । ये
स्वभाष बड़े सीधे थे, ये दयालु तथा ईश्वर भक्त थे,
पर इनमें आर्यों का संस्कार नहीं रह गया था, ये धर्म-
धन धर्म का पालन नहीं करते थे । ऐसे ही लोगों में
धीरुष्ण पले और बड़ने लगे । गोपों के निःझल प्रेम,
धनों का स्वच्छन्द धायु तथा गोपों के सरस पापशून्य
मदहली ने सुन्दर गौर धारी धीरुष्ण को अपार परा-
क्रमी तथा निःझल प्रेमी बना दिया । बाल्यकाल में ही
शारीरिक बल के अपूर्व कार्य कर दिखाये । गोप इनको
अपने प्राण तुल्य समझते थे और उनके लिये अपना

जैसे संहारे । भागवत् सम्प्रदाय—भागवद् में कथित सम्प्रदाय ।
 लोक—लोक । धिक्कात—प्रादुर्भूत । अनुयायी—अनुगामी । लोक
 र्म—लोक धर्म । उद्दामनीन—धिरक्त । समाज व्यवस्था—समा-
 ज नियम । ज्ञान विज्ञान—शास्त्रादि । विराधी—ईरो । द्वितीय—
 तृतीय । घोर—धिरक्त । नैराश्य—नाउमेदी । निराश । विषम—
 गुरु, धिरक्त । स्थिति—ज्ञान । मानं अस्य—अद्वय । साधन
 —उपाय, प्रयत्न । संतुष्ट—मग्न मान्त । अन्याचारियों—अन्या-
 यों । दमन—मर्दन, नाश । विनाश—संहार । स्थापित—
 नियम । भार्गव—हिन्दुत्वान का । धिरक्त—खिलाक । सगुण
 —गुण सहित, साकार । निर्गुण—निराकार ।

प्रथम धर्म—पहले दर्ज । परंपरा—क्रमगत । वेदशास्त्र—
 वेदशास्त्रों के जानने वाले, तत्त्वदर्शी ।

आचार्यों—उपाधियों । प्रवर्तित—चलाया हुआ । सम्प्रदाय—
 ल । आधार—अवलम्ब, सहारा । लोक धर्म-रक्षक—लोक
 धर्म को रक्षा करने वाले, तत्पुरुष समाज । लोक रंजक—लोक
 में प्रसन्न करने वाला, तत्पुरुष समाज स्वरूप—आकार ।
 नैराश्य—नाउमेदी से भरा । सुधारस्त—अनृत के रत ।

(पृष्ठ—१२७)

नैराश्य-जनित नाउमेदी से पैदा हुआ (तत्पुरुष समाज)
 उद्वेगता—खेद । प्रकुलता—प्रसन्नता । लोक व्यापार व्यापी—
 लोकोपकारियों में जान । मग्नमय—कल्याणमय । अनृष—अद्विभूत ।
 त्वार—प्रघाहित । निराश—नाउमेदी ।

आशय—सहारा । उत्तार—हृदय से निकली हुई बात ।

प्रौढ़ता—पुष्टता । प्रज्ञान की—दी । मानव—मनुष्य । सर-

सारांश

वित्त समय हिन्दुस्तान में मुसलमानों का पूर्ण रूप से राज्य स्थापित हो गया। उस समय से चारों की धीरे-धीरे गाया समाप्त हो गई। हिन्दू कविता का प्रभाव राजकीय क्षेत्र से हट कर, भक्तिपथ और प्रेम पथ की ओर चला पड़ा। बल पराक्रम को धीरे से हट कर भगवान् की ओर लग गया। यह समय देश के नैराश्रय का था। तिसा भगवान् की शरण के अन्य कोई अवलम्ब न था। रामानन्द ब्रह्माचार्य ने जिस भक्ति रस का संचय किया उसी की कबीर सुर आदि ने जनता के बीच प्रवाहित किया। मुसलमान कवियों ने प्रेम पथ की मनोहरता दिखा कर लोगों का मन लुभाया। इस भक्ति तथा प्रेम के रंग में देश अपना दुःख भूल गया।

उस समय भक्तों के दो दल थे। एक दल प्राचीन धर्म के नवीन विकास का ही अनुयायी था। और दूसरा लोक धर्म से विरक्त समाज व्यवस्था तथा ज्ञान विज्ञान का विरोधी था। यह दूसरा दल जिस घोर नैराश्रय काल में उत्पन्न हुआ उसके सामंजस्य साधन में रुम रहा। उसकी उतना ही अंग प्रहार करने का साहस हुआ। जितना मुसलमानों के यहाँ भी स्थान था। मुसलमानों के बीच रह कर इस दल के महात्माओं का भगवान् के उस रूप पर जनता की भक्ति को ले जाने का साहस नहीं हुआ जो अन्याचारियों का दमन करता है दुष्टों का संहार करता है। अतः वे अपने काय में सकल नहीं हुए।

पहला दल ने प्राचीन आचार्यों द्वारा प्रदर्शित भक्ति मार्ग का अवलम्बन किया। भगवान् के उस रूप को जनता में ला रखा, जिस रूप से भगवान् दुष्टों का दमन करते हैं, तथा धर्म की स्थापना करते हैं। तुलसीदास ने इसी भक्ति के सुधा रस से सर्व

कर भक्ति पथ और प्रेम पथ की ओर चल पड़ा । देश में मुसलमान साम्राज्य के पूर्णतया प्रतिष्ठित हो जाने पर घोरोस्ताइ के यह स्वतन्त्र सत्र न रह गया ; देश का ध्यान अपने पुरुषार्थ और बल पराक्रम की ओर से हट कर भगवान् की भक्ति तथा दया दासिण्य की ओर गया । देश का यह नैराश्य काल था जिसमें भगवान् के सिवा और कोई सहारा नहीं दिखाई देता था, रमानन्द बहुभाचार्य ने जिस भक्ति रस का प्रभूत संचय किया, कबीर और सूर आदि की बाग्यारा ने उसका संचार जनता के बीच किया । साथ ही कुतबन, जायसी आदि मुसलमान कवियों ने अपनी प्रबंध रचना द्वारा प्रेमपथ की मनोहरता दिखा कर लोगों को लुभाया इन भक्ति और प्रेम के रंग में देश ने अपना कुछ भुलाया, उसका मन बहला ।

(क) उपरोक्त पथ को सरल हिन्दी में लिखो ।

हमारे काल के समाज के साथ ही चरों की बार गुरुमाथा का समय समाप्त होता है । उस समय हिन्दी कविता की घास राजनैतिक क्षेत्र से हट कर भक्ति तथा प्रेम पथ की ओर प्रवाहित हुई । देश में मुसलमानों का पूर्णतया राज्य स्थापित हो गया । घोरोस्ताइ के लिए स्वतंत्र माना हो रहा रह गया । अतः देश का ध्यान अपने पुरुषार्थ तथा बल पराक्रम की ओर से हट कर भगवान् की भक्ति, दया तथा उदारता की ओर गया । यह देश के लिये नैराश्य का समय था । उन्ने सिवा भगवान् के अवनन्द के और कोई सहारा ही नहीं था । रमानन्द तथा बहुभाचार्य के मूर्धन्य भक्ति रस का

